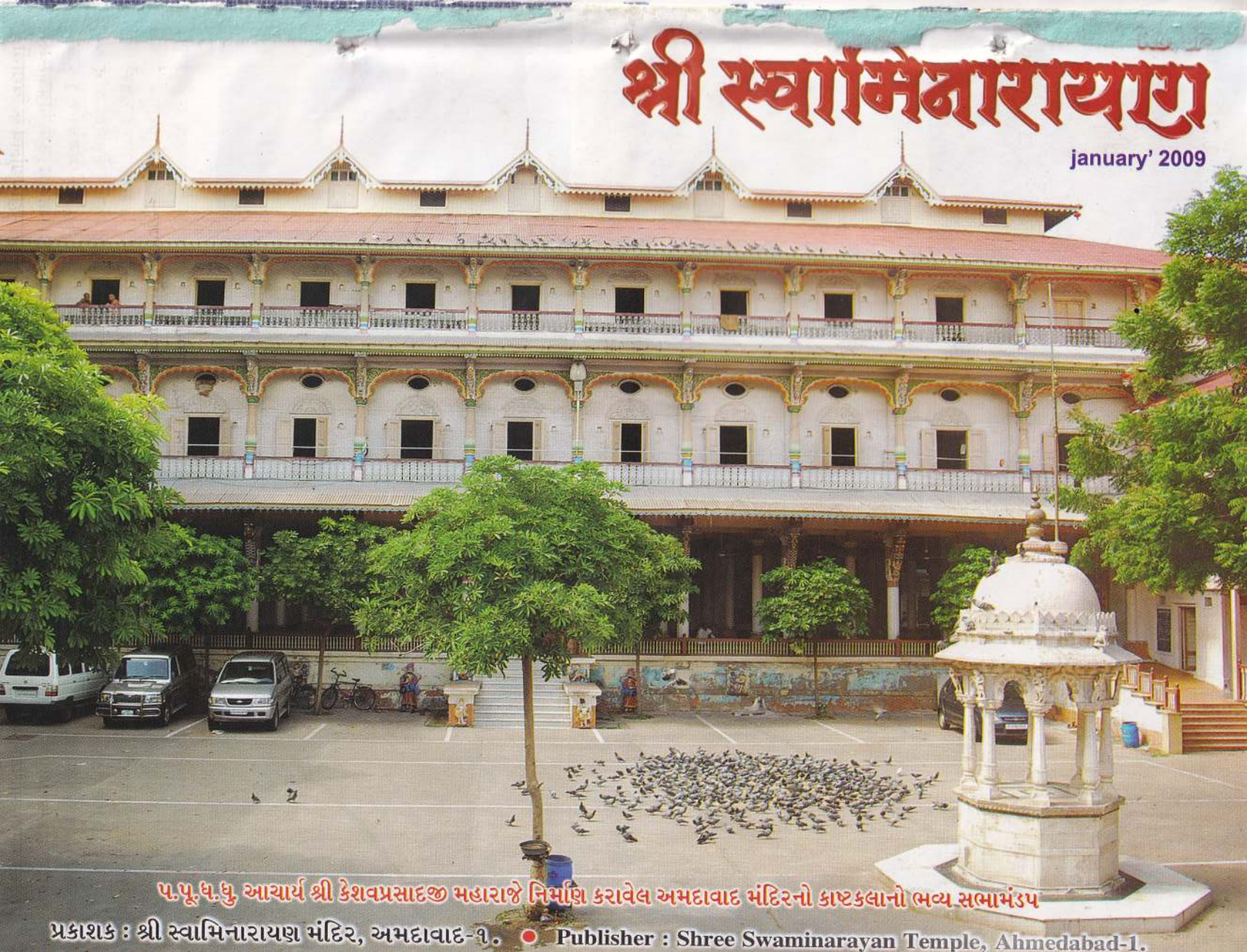
શ્રી સ્વામિનારાયણ

january' 2009



પ.પૂ.ધ.ધુ આચાર્ય શ્રી કેશવપ્રસાદજી મહારાજે નિર્માણ કરાવેલ અમદાવાદ મંદિરનો કાષ્ટકલાનો ભવ્ય સભામંડપ

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧. • Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.








(१) काणोतर (नलकाठा) गाँव में श्रीहरि के प्रसादी वाले स्थल पर चरणारविंद पर एक छत्री बनाई गयी है, जिसकी आरती उतारते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (२) काणोतर गाँव में सभा के दरम्यान प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन की प्रतिक्षा में हरि भक्त । (३) कपडवंज श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (४) सर्वोपरि छपैयाधाम के दर्शनार्थ एकत्रित वहाँ के धार्मिकजन । (५) जेतलपुर वाड़ी श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय में श्री सरस्वती पूजन प्रसंग पर कीर्तन-भजन करते हुये विद्यार्थी-संत । (६) श्रीजी महाराजने श्री नरनारायणदेव की जब प्रतिष्ठा की उस समय कांकरिया सरोवर के किनारे ब्रह्मभोज किये थे, उसी पवित्र स्थल पर "कांकरिया कार्निवल २००८" लोकार्पण प्रसंग पर जेतलपुर वाड़ी श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थी-



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - २ अंक : २१ जनवरी -२००९

अनुक्रमणिका

१	अस्मदीयम	०२
२	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	०३
३	आनन्द की लहर	०५
४	मै कौन.....?	०६
५	अपना सत्संग	०८
६	त्याग ही सर्वस्व	१०
७	आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री	११
८	प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री का दुबई (गल्फ) सत्संग प्रचारार्थ विचरण	१२
९	सत्संग बालवाटिका	१३
१०	भक्तिसुधा	१५
११	प्रश्न पेटी ???	१७
१२	सत्संग समाचार	१८

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री

तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारायणपुरा,

अहमदाबाद. फोन : २७४९९५९७,

९८२५३०९५९७ फेक्स : २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि

२२१३३८३५ (मंदिर)

२७४७८०७० (स्वा. बाग)

फेक्स ०७९-२७४५२१४५

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञासे

तंत्रीश्री

स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.

फेक्स : २२१७६९९२.

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००

वंशपारंपरिक

देशमें ५०१-००

विदेश ५०००-००

प्रति कोपी ५-००

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :

महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए

श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण महामंत्र के धूनि से सम्पूर्ण धनुर्मास में संप्रदाय के सभी मंदिरो में वातावरण देदीप्यमान हो जाता है। सामान्य श्रद्धावाले तथा सूर्यवंशी भक्त भी इस धून में आना पसन्द करते हैं। सुबह के वातावरण में शरीर, मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार अर्ध सुषुप्ति अवस्था में होते हैं, इसलिये भगवान के भजन में विघ्न नहीं करते। सूर्योदय होते ही सभी अन्तःशत्रु सम्पूर्ण स्वस्थ हो जाते हैं। जिससे आलस्य बढ़ने लगता है। ऐसे समय में यदि भजन की जाय तो पचीस प्रतिशत ही सफलता मिलती है। इसलिये अन्तःशत्रुओं का आक्रमण न हो यह ध्यान रखकर सूर्योदय से पूर्व भजन की जाय तो आत्यंतिक सुख की प्राप्ति होती है। महाराज की मूर्ति का ध्यान करते हुये महामंत्र का जप किया जाय तो आत्मबल में खूब वृद्धि होती है। अन्तःशत्रुओं के वश में होने पर तथा कुसंग का प्रतिकार करने पर ही भगवान में प्रीति बढ़ती है। पश्चात् आत्मचिंतन के पवित्र विचार आते हैं। जोसत्संग में निश्चित की गई रोज की सेवा, पूजा, दर्शन, भजन, भक्ति इन सभी को दृढता से करना चारिये। भगवान में अत्यन्त प्रेम की तीव्रता होनी चाहिये, भगवान में ही आत्म समर्पण होना चाहिये, उन्ही के प्रति आकर्षण होना चाहिये, लेकिन इसके बीच में जगत का व्यवहार विघ्न न बने इसका निरंतर ध्यान रखना चाहिये। सामान्य प्रकार का सत्संग करने से मानसिक दुर्बलता होती है, चेतना शक्ति का विकास नहीं होता बल्कि निष्ठा में विघ्न होता है। जो श्रीहरिने एक सीमा निश्चित की है, उसीमें सम्पूर्ण सत्संग समाज के प्रति निष्ठावान होकर मन, कर्म, वचन से जो सत्संग करते हैं उन पर भगवान की कृपा होती है। इस समय धनुर्मास में धुन पूर्ण करके प्रसाद को ग्रहण करते हैं, उसमें एक अलौकिक स्वाद मिलता है, भजन का स्वाद मिलता है। इसका चिन्तन अवश्य जीवन के लिये सुखकारक होगा। अतः आनेवाले समय में प्रातःकाल में आत्मचिंतन की गति में प्रगति हुई या नहीं इसका अनुचिंतन धनुर्मास में ही अवश्य कर लेना चाहिये।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वरुपदास का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

नवंबर -२००८

१. श्री डॉ. कनुभाई एस. पटेल के यहाँ पदार्पण, निकोल गाँव रोड।

३. श्री समीरभाई परीख के यहाँ पदार्पण, वटवा।

४. श्री सुरेशभाई जी. चौधरी के यहाँ पदार्पण, हिंमतपुरा, अजरामपुरा गाँव में सत्संग सभा के प्रसंग पर पदार्पण।

५. विसनगर गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

६. विहार गाँव में श्री कांतिभाई जोईताराम पटेल की जीवनचर्या प्रसंग पर आयोजित पारायण में पदार्पण, बाद में वहाँ से नाथद्वारा पधारे।

७. नाथद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

८. लवारपुर गाँव में पारायण की पूर्णाहुति पर पदार्पण।

९. शियाळगाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा काणोतर गाँव में तुलसी विवाह प्रसंग पर तथा हरिभक्तों के घरों में पदार्पण।
नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मदिर में तुलसी विवाह प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडताल में सर्वोपरि श्री लक्ष्मीनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
जेतलपुर धाममें पारायण के पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

११. वडु गांव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में दर्शनार्थ पधारे।

१४. सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री रमेशभाई अंबालाल (लक्ष्मीपुरा दुग्धालयवाला) के यहाँ पदार्पण विराटनगर।

१५. से १६. पोखरा (नेपाल० में पारायण प्रसंग पर तथा पुलहाश्रम दर्शनार्थ पधारे।

२०. मेथाण (मूलीदेश) पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

२१. चांदलोडिया श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
बालवा गाँव में लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने पधारे।

२२. कपडवंज श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री कांतिभाई के यहां होमात्मक महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, जोधपुर।

२३. श्री अनंतभाई के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा।
साणंद गांव में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२४. श्री ठाकरसीभाई ओधडभाई चावडा, श्री हरिभाई मोतीभाई परमार, श्री रणछोडभाई करशनभाई परमार (बड़ोल) तथा श्री भगवानभाई जादवभाई, श्री ललितभाई बचुभाई पटेल तथा श्री खीमजीभाई वाटलीया के यहां पदार्पण, नवा नरोडा तथा निकोल।

२५. बड़ोल (भाल) (मूलीदेश) गांव में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण खोडा, चंद्रासण गाँव में सत्संग सभा तथा साणंद गांव में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।
२७. श्री सुमेरभाई अरजणभाई देसाई तथा श्री घनश्यामभाई अरजणभाई के यहाँ पदार्पण, बापूनगर।
३०. श्री मगनभाई पी. लहरी के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, बापूनगर।
श्री प्रदीपभाई रतीलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण, राणीप।
श्री गौरांगभाई बाबूभाई कोठारी के यहां महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, बापूनगर।
श्री प्रकाशभाई बाबूभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, ठक्करनगर रोड।

दिसम्बर -२००८

१. टींबा (मूलीदेश) गाँव में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।
२. वावोल गाँव में पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।
३. श्री स्वामिनारायण मंदिर (सेक्टर-२) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
४. सारंगपुर श्री कष्टभंजनदेव नूतन मंदिर के शिलान्यास विधिप्रसंग पर पदार्पण।
५. श्री स्वामिनाारयण मंदिर मकनसर (मूलीदेश) खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।
६. श्री बालचंदभाई रवजीभाई दोंगा के यहां पदार्पण, हर्षदकोलोनी-बापूनगर।
७. महेसाणा नूतन शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित विजयस्तम्भ स्थापना प्रसंग पर पदार्पण।
८. डांगरवा गाव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
९. वांकानेर (मूलीदेश) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (महिलाओं के) में खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।
१०. श्री प्रेमजीभाई ठाकरसीभाई पटेल के यहां धून प्रसंग पर पदार्पण, धरमपुर।
श्री नटवरसिंह वरवाजी चावड़ा के यहां पदार्पण, चांदखेड़ा।
श्री कांतिभाई जोईताराम पटेल के यहाँ पदार्पण सोलागाँव।
११. बायड गांव श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१२. श्री बचुभाई डी. अमीन के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, वेजलपुर।
श्री कांतिभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट।
श्री धर्मेशभाई कांतिभाई विठ्ठलभाई के यहाँ पदार्पण, मोटेरा रोड।
१३. वसई (डांभला) श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१४-१५. भुज (कच्छ) कन्या छात्रालय के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण।
१६. श्री हनुमानजी महाराज की आरती उतारने हेतु पधारे, रतनपोल।
श्री प्रहलादभाई हरजीवनभाई सोनी के यहाँ पदार्पण पानकोरनाका।
श्री हिमतभाई चौहाण के यहाँ पदार्पण, नवावाडज।
१७. बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर धनुर्मास धून प्रसंग पर पदार्पण।
१८. डांगरवा गांव में नये मुमुक्षुओं को गुरुमंत्र तथा कंठी धारण कराने हेतु पदार्पण।
२०-२१. भुज (कच्छ) पदार्पण।
२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर, कांकरिया पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

विदेश धर्मयात्रा

२४. से १. जनवरी-०९ दारे सलाम (ट्रांजानिया) मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर तथा नाईरोबी इत्यादि अपने मंदिरो में दर्शनार्थ पदार्पण इसके साथ ही हरिभक्तों के यहां पदार्पण बाद में सत्संग प्रचार हेतु विचरण।

आनन्द की लहर

लड्डूकी रामायण



- शा. हरिजीवनदास (हिंमतनगर महंत)

एक समय की बात है : महाराज मरचा - गुण तथा रोटी का भोजन करते, यही संतो को प्रसाद में देते । भुज में यह क्रम कई दिन तक चला।

एक दिन का प्रसंग है, महाराज संतो को रोटी परस रहे थे। उसी समय एक महात्माजी पधारे, महाराजने महात्मा से कहा आप भी पंक्ति में बैठ जाइये। महात्माजी पंक्ति में बैठ गये और विचार करने लगे कि यह जो भोजन परस रहा है वह महंत है और भोजन करनेवाले सभी उसके चेले हैं। ऐसा विचार कर वह साधु कहने लगा, मैं आप के साथ ही भोजन करुँगा। आप महंत हैं तो मैं कोई साधारण साधु नहीं हूँ। महाराजने कहा ठीक है। अब महाराज भोजन के लिये बैठे तो साथ में वह साधु भी बैठ गया। उस साधु को भी महाराज गुण-मरचा और रोटी दिये। मरचा वाला लड्डू को हाथ करके देने लगे तो साधुने कहा क्यों आधा दे रहे हो पूरा दो, तब महाराजने कहा पूरा देने में कोई तकलीफ नहीं लेकिन आप पूरा खायेंगे तो आप को तकलीफ होगी। फिर भी वह पूरा एक लड्डू ले लिया और बड़ी तेजी से खाने लगा थोड़ी देर में सभी सपरचट कर गया।

देखते-देखते अब उसके पेट में जलन होने लगी। वह मरचा और गुण का लड्डू था, उसमें भी लाल मरचा था। भगवान के सिवाय उसे कौन पचा सकता है। अब उदर में पीड़ा का भयंकर अनुभव करने लगे। अरे राम ! यह क्या हुआ ! पेट में बहुत जलन हो रही है। में मर गया। हे राम ! दया करो ! बाबाजी व्याकुल हो उठे ! महाराज को दया आई ! सुन्दरजी से घी मंगवाकर एक कटोरी बाबाजी को पिला दिये।

अब थोड़ी शांति का अनुभव करने लगे। अब कुछ अच्छा हो रहा है। महाराजने कहा "अब दूसरा लड्डू चाहिये" । अरे प्रभु ! लड्डू की बात छोडिये। रोटी खिलाइये। बाद में महाराजने साधु बाबा को रोटी-छाछ खिलाया। बाबाजी के इस प्रसंग से महाराज को बड़ा आनंद हुआ। इसके साथ ही महाराज के मजाकिया स्वभाव तथा तपस्वीपना का अनुभव हुआ।

विदेश के अपने मंदिरों में FAX नंबर तथा इ-मेईल एड्रेश (निर्णय के लिये) के लिये

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञात्मक आशीर्वाद से विदेश के अमेरिका, इन्लैंड, ओस्ट्रेलिया, आफ्रिका, केनिया, युगान्डा, स्वीडन, न्युझीलेन्ड, केनेडा, गल्फ के अपने श्री स्वामिनारायण मंदिरों के FAX तथा E-mail एड्रेश अपने व्रत-उत्सव के निर्णय में प्रकाशित करने के लिये नीचे के एड्रेश पर अति शीघ्र मेइल करने के लिए विन्ती है। E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मै कौन.....?

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी



श्री स्वामिनारायण भगवान ने ग.म.प्र. २० वें वचनामृत में कहा है कि शरीर में रहनेवाला जीव, रुप, कुरुप, बाल, यौवन तथा वृद्धावस्था को देखता है । लेकिन देखने वाला स्वयं को नहीं देखता । मात्र बाह्य पदार्थ को देखता है । जिसमें श्रोत्र, त्वक, चक्षु, रसना, घ्राण इत्यादि इन्द्रियों द्वारा विषय सुख को भोगता है, लेकिन स्वयं के सुख को नहीं भोगता, यहीं सबसे बड़ा अज्ञान का विषय है।

बाद में शुकमुनि ने शंका किया कि अपने सुख को देखना क्या अपने हाथ में है ? यदि अपने हाथ में होतातो जीव सदा अज्ञानी होता ?? तब श्रीजी महाराजने कहा कि जिसने सत्संग किया है वही अपने जीवात्मा का दर्शन किया है । सही में तो जीव आत्मस्वरुप को देखने का प्रयास ही कब किया ।

अब यहाँ यह प्रश्न होता है कि क्या हम अपने को कभी पहचानने की कोशिष किये हैं ? जब हम अपने को स्वप्न में भी भूल जाते है तो नित्यता कहाँ रहती है । जब हम स्वयं को न पहचान सके तो इसे क्या कहेंगे ?

हमें ऐसा होता है कि सभी अपने-अपने को पहचानते है, कभी ऐसा भी होता है कि स्वयं को पहचान नहीं पाते हैं।

जगत में अपने जैसे अनेकों जीव हैं जो स्वयं को नहीं पहचान पाते हैं । जो स्वयं को पहचान जाय तो निश्चित वह परमात्मा को पहचान जायेगा ।

इस संसार में स्वंय की पहचान कराने वाले विरले होते है । वे हैं माहात्मा । वे सभी के वंदनीय है । महात्मा सुदुर्लभः - To know they self is to know God ऐसे महात्मा का दर्शन भी बड़े भाग्य से होता है।

हमें ऐसा होगा कि हम अपने को पहचानते हैं लेकिन परमात्मा को क्यों नही पहचानपाते ? इसका कारण यह कि जीव अज्ञान के कारणअपने को नही पहचान पाता है । वह इस जगत में स्थूल देह को तथा स्थूल देह से सम्बन्धित पदार्थ को ही पहचानता है । स्थूल शरीर के प्रत्येक अंग के पहचान की जिज्ञासा होगी यह क्या है ? यह क्या है ? तब कहा जायेगा कि यह हाथ है, यह नाक है इत्यादि कि पहचान कराई जायेगी , लेकिन जिस जीव की यह शरीर है उसकी पहचान कराने वाला कोई बिरला होता है।

शास्त्र तथा संत कहते हैं कि मनुष्य ? तुम्हारे हृदय हाथ, मुख, मस्तक, पेट इत्यादि की प्रतीति तो तुम्हे हो जायेगी लेकिन जो यथार्थ है जिसे जानना चाहिये उसकी जिज्ञासा भी जीव को नहीं है तथा यथार्थ तत्ववेत्ता भी नहीं जो पहचान करा सके । तुम्हारे शरीर के अवयव तुमसे अलग हैं । कारण यह कि जगत में जीवात्मा को जो भी पदार्थ मिला है उसे वह अपना मान वैठा है, यद्यपि उसका वह पदार्थ नहीं है, जबकि शरीर कभी उसकी नहीं थी तो अन्यपदार्थ उसका कैसे हो सकता है ? अब रही बात पहचानने की । स्वयं इतना सामर्थ्य हो जाय कि वह अपने स्वरुप को तथा जगत के पदार्थो को पहचानने में भेद कर सके, इसके लिये सच्चे गुरु की आवश्यकता है । अथवा जन्म जन्मांतर तक किये गये तप का जब परिणाम होगा तो यह ज्ञान होना संभव है । अन्तःकरण निर्मल होने पर चार प्रश्न उपस्थित होते है - (१) मैं कौन हूँ ?

(२) कहाँ से आया हूँ ? (३) कहाँ जाना है ? यहाँ आने का क्या कारण है ?

स्वयं अपने को पहचानना ही आत्मज्ञान कहा गया है। वही आत्मज्ञान परमकृपालु परमात्मा की कृपा से संभव है । परमात्मा की कृपा-भगवान की अनन्य भक्ति से अथवा सद्गुरु की कृपा से प्राप्त होती है । ऐसा अत्यन्तकठिन कार्य (आत्मज्ञान) एकाएक कैसे संभव ?

आत्मज्ञान - परमात्मज्ञान - परमात्मा के जानने कि जिज्ञासा उत्पन्न होना अपने असंख्य पूर्वजन्मो के सुकृत का फल है। मनुष्य के पुण्यफल अथवा तप के फल से अति शीघ्र आत्मतत्व का उदय होते ही हृदयाकाश में पवित्र ज्ञान का प्रादुर्भाव हो जाता है।

ज्ञानदृष्टि प्राप्त करने के लिये शास्त्र, तथा सत्पुरुषों की सेवा एवं सत्संग करना चाहिये । ज्ञान का अंतिम लक्ष्य भगवत् प्राप्ति है । आत्मज्ञान प्राप्त करना ही सत् विद्या है । भगवान के स्वरुप में दृढ निष्ठा ही मोक्ष प्राप्त करना है।

आत्मा परमात्मा के स्वरुप को पहचानने से परमात्मा की प्राप्ति होती है।

चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद यह मनुष्य शरीर मिली है। इसलिये आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये संत तथा शास्त्रों के वचन में विश्वास रखना चाहिये। इस शरीर से ही भजन भक्ति संभव है। इस जन्म की यही सार्थकता है। यही कर्तव्य है । धन-दौलत कुटुम्ब-परिवार, यह सब तो जहां जिस योनि में जन्म होगा मिलता ही रहेगा। इस बात को अभी समझें या अनेक जन्मों के बाद समझें पर एकदिन समझना तो पड़ेगा ही । इसलिये इसी जन्म को सफल बनाना चाहिये । मानव शरीर प्राप्त करने की सार्थकता ही परमात्मा की प्राप्ति है । पंचतत्व का मानव शरीर देव मंदिर है। भगवान के रहने का स्थान है । यह मानव देह ही मोक्ष का साधन है। हमें श्रीजी महाराज बड़ा सुन्दर अवसर दिये हैं लेकिन मनुष्य अपने जीवनपथ का निर्माण नहीं कर सकता है।

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने वनचामृत में जीव को अपने स्वरुप को पहचानने की बात की है । वच.ग.म.प्र.व. २ अज्ञाने करीने जीव इन्द्रियों अन्तःकरण ने पोताना रुप माने छे । वस्तु गमे तो जीव इन्द्रियों तथा अन्तःकरण थी नोखो छे। आत्म विचार एक करवोजे छूं आत्मा छूं ने मारा विषे इन्द्रियों अन्तःकरणनो संबन्धनथी. वच.ग.म.प्र. ३० ज्यारे प्रकृति पुरुष थकी पर एवुं ने शुद्ध चैतन्य ब्रह्म तेने जे एक सत्य जाणे ने ते ब्रह्मनेज पोतानुं स्वरुप माने ते ब्रह्म रुप थईने परब्रह्म एवाजे श्रीकृष्ण भगवान तेनुं भजन करे।

वच. ग.म.प्र. ३२ कुटुम्बी नो संबन्धतो टले तो स्थूल सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह थकी नोखो एवो जो आ देहने विषे जीवात्मा तेने पोतानुं रुप जानीने तेने विषे भगवाननी मूर्ति धारीने जाति-वर्ण, आश्रम तेना मानने मूकीने भगवानना स्मरण विषे तत्पर थाय।

वच.ग.म.प्र. ४५ मायाना त्रण गुण-दश इन्द्रियां - दश प्राण चार अंतःकरण, पंचभूत, पंच विषय तथा चौदह इन्द्रियों ना देवता आमाथी कोई नो संग रहेवा देवो नथी तो ए सर्व मायिक उपाधिथकी रहित सत्तामात्र एवो जे आत्मा ते रुपे थईने भगवाननी भक्ति करो एवा सर्वने करवा दे।

वच. साणं. ४ माटे चोख्खु समजे जे हूँ आत्मा ते मारा जेवा गुण देहने विषय एकेय आवतो नथी अने जड दुःख तथा मिथ्या रुप जे देह तेना जे गुण ते हूँ चैतन्य ते मारे विषे एकेय आवता नथी। एवी व्यक्ति समजीने अत्यंत निर्वासनिक थईने चैतन्य रुप थकी पुरुषोत्तम भगवाननुं चिंतन एवोजे जड चैतन्यनो विवेक तेने दृढ विवेक जाणवो। इसलिये श्रीजी महाराज तथा संतो के वचन में दृढ विश्वास करके अपने मार्ग पर चलते रहेंगे तो निश्चित है कि आत्म स्वरुप को पहचानने में कठिनाई नहीं आएगी। परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करके इस नाशवंत मिथ्या देह की आशक्ति छोड़कर ज्ञान प्राप्त कर जीवन का अंतिम ध्येय अक्षरधाम की प्राप्ति कर सकते हैं।

अपना सत्संग

- साधु घनश्यामप्रकाशदास - जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)



अपना सत्संग कोई धर्म का वाडा या तालाब के किनारे जलविहिन भाग में पानी के लिये बनाया हुआ गड्ढा नहीं हैं। गलियों की सड़के बड़े मार्ग या बड़ी सड़क में मिलती है, बड़ी सड़क राज मार्ग में मिलती है, वे सभी राजमार्ग नेशनल हाईवे (राष्ट्रीय) मार्ग में मिलते हैं। ए सभी मार्ग अन्तर राष्ट्रीय मार्ग में जाकर परिणत हो जाते है। फिर भी ए सभी समुद्र की विशाालता के आगे बहुत छोटे ही रहते हैं। सातो समुद्र की यंसुक्त विशालता भी आकाश की विशालता के आगे न्यून हैं। इसी तरह आकाश की विशालता से सत्संग की विशालता अनवधिकातिशय है। वेंदो कि उत्पत्ति काल से आदि काल से लेकर पांच वेदों का भिन्न अस्तित्व अनादि काल से स्वीकार करके अमरत्व को प्राप्त करके अंत रहित ऐसे अस्तित्व के मंथन में सत्संग का नाम चमत्कृत हुआ। इसकी अपरिचित विशालता में समुद्र की लहर या पूर्णिमा का प्रकाश या अमावास्या का अंधकार, राहु-केतु का सूर्यग्रहण या चंद्रग्रह, प्रणव नाद स्तुति-निन्दा की गूंज, अहं ममत्व की सुगन्धइसकी विशालता में डूब गया है, फिर भी सत्संग की गहराई में स्पन्दन तक नही हुआ। सत्संग की दिव्यता तो क्षितिज पार करने जा रही है।

ऐसे सत्चित् तथा आनंदरुप, अवधिरहित विशाल सत्संग में अपना क्या ? उसमें हम कितने ? इसका हमथोड़ा चिंतन करते हैं-

चार आने का सत्संग

काका, मामा या मौसी का सत्संग, इनके साथ मिलने का अवसर हुआ या उनके प्रभाव से प्रकाशित होकर गुणबुद्धि में थोड़ा परिवर्तन हुआ और सत्संग में आये, कंठी धारण किये, तिलक चन्दन इत्यादि धारण करने लगे, मंदिर में देव दर्शन करने लगे, दान-धर्मादा द्वारा सत्संग प्रवृत्ति करने लगे। यहाँ तक केवल चार आने का सत्संग कहलायेगा। अर्थात् अभी मात्र इन्द्रिय जन्य गुण बुद्धि वाला सत्संगी कहे जायेंगे। इतने से तृप्ति मानने की अपेक्षा मुमुक्षुभाव में तत्परता रखने से सत्संग का अगला सत्संग सोपान सिद्ध होगा।

आठ आने का सत्संग

उपरोक्त सत्संग में थोड़ा विशेष चिंतन करें तो सत्संग के इतिहास को बुद्धिपूर्वक समझना पड़ेगा। प्रसादी के यात्राधामों का दर्शन करने यदा कदा जाना चाहिये। वहाँ जाकर भगवान की लीलाओं को यथार्थ जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। इसके साथ साम्प्रदायिक शास्त्रों से परिचित बनें। पूर्ण श्रद्धा के साथ उसका अध्ययन करना चाहिये। शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, भक्तचिंतामणी इत्यादि मुख्य शास्त्रों का चिंतन करके मन-बुद्धिको केन्द्रित करना चाहिये। इसके साथ सत्संग की

परम्परागत रीति-नीति के अनुसार वाणी, विचार तथा वर्तन को ढकने का प्रयत्न करना चाहिये। मानसीपूजा, प्रातःपूजा, संध्या आरती तथा रात्रि में नियम चेष्टा में एकग्रतापूर्वक ध्यानस्थ बनें तभी अंतःकरण प्रधान मध्यस्थिति के सत्संगी कहे जायेंगे।

बारह आने का सत्संग

सत्शास्त्रों का अभ्यास-सच्चे संत का समागम तथा इन दोनो के विचार से प्रगट वैराग्य को सांख्यभाव को कर प्रभु स्वरुप में अनन्य भक्तिभाव जोड़कर दृढयोग साधना सिद्धि होती है। पंच विषय तथा उसका भोग एवं इसके फल संबन्धित ज्ञान होने पर भगवत् स्वरुप की उपासना में तल्लीन होना चाहिये। सदा साकार, सर्वोपरि, सर्वकर्ता तथा प्रगट श्रीहरि के स्वरुप का सगुण-निर्गुण पना का अन्वय-व्यतिरेक ज्ञान होता है। इन्द्रिय, अंतःकरण तथा जीवन दीक्षित अनुभव ज्ञान सहज रीति से प्राप्त होने पर आत्मस्वरुप में परमात्मा का सांनिध्य प्राप्त होने लगता है। शुभ-अशुभ सभी प्रकार की वासनाओं से मुक्ति होते ही श्रीहरि के अपरोक्ष रुप का भी ज्ञान होने लगता है। अहोरात्र मात्र उसी रुप का अन्तर्बाह्य में भाव की उपस्थिति ही बारह आने का सत्संग कहा जायेगा। क्योंकि अभीभी उसमें माया का संग तो है ही। अवस्था तथा गुणों के भाव सुषुप्त होते हुए भी संबन्धरहता है। इसलिये यहाँ तक पहुंचे हुये विद्वान तथा गुणी संत एवं सत्संगि महापुरुष पर भी माया का विघ्न तो रहता ही है। इसलिये अति सूक्ष्म सावधानी से मन को एकाग्र करके आत्मशुद्धि करन तथा परमात्मा स्वरुप की अखंड स्मृति बनी रहे इसके लिये सदा सावधान रहना चाहिये।

सोलह आने का सत्संग

दश इन्द्रिय तथा इग्यारहवां मन जिन-जिन विषय में जायें उन्हें वहाँ से वापस लाकर ब्रह्म यज्ञ में होमने को योग यज्ञ कहते हैं। इस तरह करने वाले के अंतर में स्वरुप जो ब्रह्म उसी में पुर्ण पुरुषोत्तम नारायण का साक्षात्कार हो जाय तो उसे योगयज्ञ का फल समझना चाहिये। (वच.ग.म. ९) देह, इन्द्रिय, अन्तःकरण, तीन गुण, तीन अवस्था इत्यादि के विषय से निवृत्त पारायण होकर अपने आत्मा में भगवान की मूर्ति को धारण करके उसी में निमग्न होने से निश्चय सिद्ध ब्रह्मरुप अपने आत्मा का दर्शन होता है। इस स्थिति में पहुंचजाने पर भी पुरुषोत्तम नारायण की उपासना में दासत्व भाव के साथ छोटे से छोटे संत या हरिभक्तों के प्रति गुलाम जैसा भाव हो जाता है। अक्षरधाम में अनंत कोटि मुक्त रहते हैं फिर भी वे महाराज की सेवा चाकरी का भाव ही रखते हैं। (वच.ग.म. ६७) इस तरह पूर्णकाम होते हुए भी मान-अपमान सहन करके समभाव से सत्संग की सेवा में ओतप्रोत रहकर ऐसे महामुक्त आज भी विचार रहे हैं। (वच.ग.प्र.२१) ऐसी स्थिति प्राप्त होते ही हम अपने सत्संग में हैं तथा सत्संग मुझमें है ऐसा भाव आजाता है।

इस तरह यह सत्संग हीरा-मोती तथा नाना विधरत्नों की खान के समान मुक्तों से सदैव भरा रहा है। सभी अवतारों को अपने में से प्रगट करके पुनः अपने में लीन करले ते हैं। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण स्वयं इस सत्संग के शिरताज तथा श्रीहरि स्वयं की गद्दी पर जिसे बैठाये ऐसे महाप्रतापी आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री तथा ब्रह्मांड की क्रिया को रोकने में समर्थ ऐसे संकल्प मूर्ति गोपालानंद स्वामी एवं स्वयं की वाणी की मधुरता का वरसात करने वाले गरीब स्वभाव के मुक्तानंद स्वामी, वैराग्य मूर्ति निष्कुलानंद स्वामी, प्रेम भक्ति के अपर स्वरुप प्रेमानंद स्वामी, गगन चुंबी मंदिरों का निर्माण कराने वाले श्रीहरि के साखा ब्रह्मानंद स्वामी जैसे शीघ्र कवि इस सत्संग को चमत्कृत करते रहे हैं। ऐसी ही गरिमा के सजजोने में हम सभी का सदा सहयोग बना रहे ऐसी प्रभु को प्रार्थना ! हम सभी सत्संग के सत्कार्य में सहभागी बने।

त्याग ही सर्वस्व

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु स्वामी नारायणस्वरुपदासजी



अपनी भारतीय संस्कृति में कितनी वार सुनने में आता है कि त्याग करने से मनुष्य सुखी होता है। क्योंकि त्याग करने से उसके सामने उससे अधिक वस्तु मिलती है। इसीलिये तो कहा गया है -

"जेटलुं छोडशो एटलुं पामशो।"

क्योंकि त्याग में सर्वस्व छिपा हुआ है। पहले के जमाने में बड़े बड़े राजा पागल नहीं थे जो सर्वस्व राजवैभव त्याग कर जंगल में तप करने निकल जाते थे। उन्हें त्याग करने में कोई अलौकिक सुख प्राप्त हुआ होगा, जिससे वे त्याग करके निकल गये होंगे। त्याग में मनुष्य के लिये प्रभु के वचन हैं कि सबकुछ त्याग कर एक परमात्मा से लीन हो जाने से कोई अलौकिक आनंद की प्राप्ति होती है।

इस तरह जो त्याग करे वह तरे। कोई मोटर कार लेकर सीधे स्वीमींग पुल में कूद नहीं जाता है। तैरने की इच्छा हो तो मोटर, कोट, कमीज, टाई, घड़ी इत्यादि को निकालना तो पड़ेगा ही, अन्यथा डूब जायेंगे। ऐसा न करने से ही हम डूब जाते हैं। क्योंकि हम सब कुछ साथ लेकर ही निकलते हैं, किसी वस्तु का त्याग तो करते ही नहीं, इसीलिये तो डूब जाते हैं। जब त्याग करेंगे तभी तरेंगे। इसके अलावां इस भवसागर को पार करना बड़ा कठिन है.

अपनी भारतीय संस्कृति में महापुरुषों के जीवन को देखें तो ख्याल आयेगा कि त्याग किसे कहते हैं। राजा भरत सब कुछ त्याग कर जंगल में निकल गये थे। क्योंकि उन्हें इसके रहस्य का पता था, त्याग में ही मजा है। हम प्रभु की रची सृष्टि से भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं - जैसे वृक्ष, गाय, नदी, समुद्र इत्यादि सभी अपने जल एवं फल को स्वयं नही पीते और नहीं खाते हैं। ये सभी परोपकार के लिये अपनी मस्ती में झूमते रहते हैं। अपने में बहुत सारा जल एवं फल एकत्रित करके मानवजाति को समर्पित कर देतें हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि त्याग ही सर्वस्व है।

एक दृष्टांत देखें तो ख्याल आयेगा कि त्याग में या एकत्रित करने में सुख है।

एक गुरु के दो शिष्य थे। एक त्याग में मानता था, दूसरा संग्रह में मानता था। एक कहता त्याग बड़ा दूसरा कहता संग्रह बड़ा। एक कहता तैरना हो तो त्याग करना पड़े, दूसरा कहता संग्रह विना दुनिया में चलता ही नहीं। चलते चलते दोनो नदी के किनारे आये। नदी के उस पार जाना था। एक नाविक किनारे खड़ा था। नाविकने कहा हम किनारे पहुंचा देंगे लेकिन एक व्यक्ति का पचास पैसा लेंगेगें। जो त्याग में मानता था उसके पास पैसे नहीं थे। दूसरे के पास पैसे थे क्योंकि वह संग्रह करता था। उसने तुरंत उसे आठ आना निकाल कर दे दिया और मित्र से कहा कि तुम्हारा देदूं, तो उसने हाँ कह दिया। अब दोनो उस नाव में बैठकर चल दिये। जो द्रव्य संग्रह था वह नाचते कूदते चला और दूसरे मित्र से कहते जा रहा था कि देख आज संग्रह न किया होता तो हम लोग पार कैसे जाते। वह सब मौन होकर सुन रहा था। इतने में नाव किनारे पहुँची, अब तो मानेगा कि संग्रह ही सत्य है। नहीं त्याग सत्य है। तुम्हारा आठ आना दिया तो भी ? तूं मेरा आठ आना दिया तो क्या ? त्याग ही सच्चा है। मैं एक रुपये का संग्रह किया तो ही हम दोनो पार कर सके। नही एक रुपये का भी संग्रह नहीं किये इसलिये पार आ सके त्याग का यह फल है कि इस पार आ गये। जो एक रुपये का संग्रह किया होता तो नाविक इसपार नहीं लाता।

इसलिये उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट हो गया कि त्याग में ही सर्वस्व है। इससे समझना चाहिये की जीवन में त्याग का ही महत्व है। "त्याग कर भोगो" यही हमारी संस्कृति है।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री

- राजन कनैयालाल भावसार (विसनगर)



जगत पिता श्री धर्मदेव श्रीहरिप्रसाद नाम से तथा जगत विख्याता माता श्री भक्ति देवी श्री बालादेवी (प्रेमवती) नाम से अवतार धारण करके छपैया में रहने लगे। उन्हे प्रथम संतान में स्वयं भगवान संकर्षण अर्थात् श्री बलदेवजी श्री रामप्रतापजी के नाम से अवतरित हुए। दूसरे संतान में स्वयं अक्षराधिपति पुरुषोत्तम भगवान श्री हरिकृष्ण (श्री स्वामिनारायण) नाम से प्रगट हुए। तीसरे संतान में स्वयं श्री प्रघुम्न भगवान श्री इच्छाराम के नाम से प्रगट हुए।

श्री रामप्रतापजी महाराज को (१) श्री नंदरामजी (२) श्री अयोध्याप्रसादजी (३) श्री ठाकोरजी इस तरह तीन पुत्र हुये। जिसमें श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जन्म वि.स. १८६५ ज्येष्ठ शुक्ल-११ (निर्जला एकादशी के दिन हुआ था। श्री अयोध्याप्रसादजी बाल्यावस्था से ही भक्तिवाले थे। इसलिये भगवान श्री स्वामिनारायण ने बाल्यावस्था से ही अयोध्याप्रसादजी महाराज को अपनी दिव्य मूर्ति का सुख दिया था।

भगवान श्री स्वामिनारायण सभी परमहंस एवं हरिभक्तों की इच्छा से स.गु. परमचैतन्यानंद स्वामी तथा स.गु. निर्गुणानंद स्वामी धर्मकुल को लेने के लिये उत्तर प्रदेश गये। उस समय वे लोग उत्तरप्रदेश से गुजरात के लिये प्रस्थान किये। रास्ते में अयोध्याप्रसादजी महाराजकी तबियत बिगड़ गयी इससे सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण छाया रुप में वहाँ प्रगट हुये तथा अयोध्याप्रसादजी महाराज को जल पिलाये। यह दिव्य दर्शन स्वामी निर्गुणानंदजी को हुआ। इससे पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का ज्वर उतर गया। इसके बाद धर्मकुल को साथ लेकर कारियाणी गाँव में आये। उस समय सर्व प्रथम अयोध्याप्रसादजी महाराजने भगवान श्री स्वामिनारायण को प्रत्यक्ष मनुष्यरुप में देखा। उस रुप को देखकर जो रुप बाल्यावस्था में देखे थे उसकी प्रतीति हुई। इसलिये उन्हें भगवान के स्वरुप में दृढ निष्ठा हो गई। इसके बाद वे आजीवन श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति के विषय में स्वप्न, जाग्रत, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं में एक जैसी स्थिति हो गई।

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने वडताल में वि.स. १८८२ कार्तिक शुक्ल-११ ता. २१-११-१८२५ दिन मंगलवार को भरतखंड के उत्तर विभाग में स्थित अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठ के आचार्य के रुप में अपने बड़े भाई के द्वितीय पुत्र श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को अपने पुत्र के रुप में स्वीकार करके प्रतिष्ठित किया था। दक्षिण विभाग में वडताल श्री लक्ष्मीनारायण देव पीठ के आचार्य के रुप में अपने छोटेभाई श्री इच्छारामजी के चौथे पुत्र श्री रघुवीरजी महाराज को अपना दत्तकपुत्र लेकर स्थापित किया।

आचार्य पद की स्थापना के बाद भगवान श्री स्वामिनारायण को बडोदरा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड का सभी संत हरिभक्तों के साथ अपने नगर में तथा महल में पदार्पण के लिये भावपूर्वक आमंत्रण मिला। इसलिये श्रीहरि सभी संत हरिभक्तों के साथ तथा दोनो आचार्यों के साथ वि.स.नं. १८८२ कार्तिक कृष्ण-३ ता. २८-११-१८२५ दिन सोमवार को वडोदरा पधारे। सयाजीराव गायकवाडने भव्य संमान के साथ समग्र वडोदरा शहर में भगवान श्री स्वामिनारायण की शोभायात्रा निकाली थी। जिससे हाथी को नानाविधअलंकृत करके भगवान श्री स्वामिनारायण को हरैदे पर बैठाकर नगर यात्रा निकाली थी।

दूसरे क्रम के हाथी पर शुकमुनि तथा मुक्तानंद स्वामी बैठे थे। तीसरे हाथीपर आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री तथा रघुवीरप्रसादजी बैठे थे। इन तीन हाथियों के पीछे गायकवाड सरकार की चतुरंगी सेना, श्रीहरि के पार्षद, काठी दरबार तथा अन्य हरिभक्त एवं परमहंस थे। इसके बाद श्रीहरिने राजा के महल में पदार्पण करके आशीर्वचन दिया। इस तरह तीन दिन तक वडोदरा में रहकर राजा को दिव्य मूर्ति का सुख दिया।

प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री का दुबई (गल्फ) सत्संग प्रचारार्थ विचरण



युनाईटेड आरब देश में अपने मूल संप्रदाय के श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के आश्रित भक्त व्यवसायार्थ स्थाई हुये हैं। इधर काफी लम्बे समय से प.पू. आचार्य महाराजश्री गल्फ के देशो में पधारे नही थे, इसलिये वहाँ रहनेवाले भक्तों के मन में पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन की खूब चाहना थी। परंतु श्रीहरि अपने भक्तों की प्रार्थना सुन लिये। इतने में श्री भीमजीभाई टांक, उनकी नई फेक्टरी तथा ओफिस के उद्घाटन प्रसंग पर, उनके आग्रह पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ ता. १०-१२-०८ के दिन दुबई पधारे। अनेक हरिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री के स्वागतार्थ एरपोर्ट पर उपस्थित हुये थे।

शाहजांह में श्री भीमजीभाई के घर निवास करके, वहाँ के मंदिर में आरती उतारकर हरिभक्तों द्वारा बनाई गई केक को अपने वरद् हाथों से काटकर कहे कि आज किसका जन्मदिन है, तब श्री भीमजीभाईने कहा कि, आप यहाँ पधारे है, यही हम सभी के लिये जन्म दिन है। धन्य उन भक्तों की समझदारी की ता. ११-१२-०८ के दिन प्रत्येक हरिभक्तों के घर प.पू. महाराजश्री पदार्पण किये उस समय हरिभक्तों की आँखे आनंद से भींग गई थी। शाहजांह स्काय लाईन कॉलेज के विशाल हाल में सभा का आयोजन किया गया था। सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारने के बाद प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्जन किया गया था।

प्रासंगिक सभा में भक्ति स्वामीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण हेतु सहयोग की प्रेरणा दि थी। बाद में निमेष ठक्कर तथा रमणीकभाई मिस्त्रीने धर्मकुल माहात्म्य को समझाया था। प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्रीहरि में निष्ठा विशेष रखना तथा फ्रिज एवं सिंहासन को पवित्र रखना। फ्रिज में ऐसी वस्तु रखनी चाहिये जिससे आहार शुद्ध रहे। उपासना तथा आहार दोनो शुद्ध रखने से जीवन शुद्ध होगा। भक्तों का सिंहासन पवित्र देखकर हमें आनंद हुआ है।

श्री मितेषभाई की प्रार्थना पर महाराजश्रीने कहा कि अब मैं निवृत्त हो गया हूँ, फिर भी आचार्य महाराजश्री तथा गादीवालाजीको अवश्य भेंजता रहूँगा। आप सभी को वियोग नहीं होने पायेगा। यह सुनकर हरिभक्त खूब आनंदित हो गये। पू. महाराजश्रीने कहा कि हम सभी एक कुटुंब के हैं। यहाँ भी साथ है, अक्षरधाम में भी साथ रहेंगे।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के विषयमें बताया कि ऐसा संग्रह स्थान बहुत ही आवश्यक था। प्रसादीकी वस्तुओंको रख-रखाव उचित ढंग से हो सकेगा। जो अस्त व्यस्त अलग-अलग वस्तुयें थी वह एक स्थान पर होजायेंगी।

सभा संचालन श्री किरीटभाई भट्टने किया था। सुंदर रास का आयोजन किया गया था। रास देखकर पू. महाराजश्री बहुत प्रसन्न हुये।

ता. १२-१२-०८ के दिन श्री भीमजीभाई टांक की नई फेक्टरी का विधिवत् उद्घाटन प.पू. बड़े महाराजश्रीने किया था। ऑफिस में पू. महाराजश्री के हाथों से महापूजा रखी गई थी। भीमजीभाई तथा उनके पुत्र महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे। महापूजा विधिभक्ति हरि स्वामी तथा विश्वविहारी स्वामीने करवाई थी.

सायंकाल दुबई नवा वीला में भव्य सभा का आयोजन किया गया था। हरिभक्तोने प.पू. बड़े महाराजश्री का स्वागत किया था।

महाराजश्रीने सर्व प्रथम श्रीहरि की आरती उतारी थी। बाद में भक्तोंने महाराजश्री की आरती उतारी थी। कौशिकभाई तथा पारसभाईने कीर्तन भक्ति की थी। संतोने धर्मकुल की महिमा समझाई थी।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये बताया कि यहाँ आकर मुझे खूब आनंद हुआ। आप लोग भजन भक्ति करके सुखी बने। जिस तरह नारद-हनुमानजी का नाम भगवान की डायरी में है इसी तरह आप सभी का नाम भगवान की डायरीमें जुड़ गया है।

पू. महाराजश्री मंदिर की जगह देखकर खूब प्रसन्न हुये। ता. १३-१२-०८ की शाम को श्री शामजीभाई के घर श्रीहरि मंदिर में सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें संतोने प्रेरक प्रवचन किया और बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

इस यात्रा प्रवास में प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ स्वामी देवप्रकाशदासजी महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी, भक्ति स्वामी, विश्वविहारी स्वामी तथा पार्षद वनराज भगत तथा अमेरिका से सोमाभाई तथा रसिकभाई एवं ओमान से श्री योगेशभाई आये थे।

सत्संग भावपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)



वचन से निवृत्ति एवं प्रवृति

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

मध्य रात्री का समय, सर्वत्र निरव - शांतिका वातावरण है। "तेरा" गाँव में संत-पार्षदों के साथ श्रीहरि पधारे हुए है, सभी गाँवजन तथा संत योगनिद्रा-अधीन है। उसी समय अचानक श्रीहरि डुंगरजी नामक एक पार्षद को आज्ञा किये, डुंगरजी ? उठ जाइये और मेरे साथ चलिये। डुंगरजीने कहा कि महाराज ! इतनी रात्री में ? उठ जाइये और मेरे साथ चलिये। डुगंरजीने कहा कि महाराज ? इतनी रात्री में ? हाँ, चुपचाप साथ चलो। डुंगरजी खड़े तो हो गये और आंख मींचते हुए साथ हो लिये। थोड़ा ही चले कि पुनः कहने लगे महाराज ! अभी तो मध्यरात्री है, चारो तरफ अंधकार ही अंधकार है। ऐसा सुनने के बाद प्रभु को हुआ कि सेवकधर्म का पाठ डुंगरजी को सिखाना ही पड़ेगा।

सेवक का धर्म क्या होता हैं ? आज्ञा हुई कि चलदेना चाहिये। जब सेवक प्रश्न करे तो समझना चाहिये कि कुछ अभी कमी है। पुनः डुंगरजी कहते हैं महाराज ! दरवाजे में ताला लगा है। पुराने जमाने में जो राजा जिस राज्य का शासन करता उस नगर को या गाँव को चारो तरफ से किला बन्दी करके रखता। एक ही दरवाजा होता जिसमें रात्री के समय ताला बन्दकर दिया जाता था। महाराज ने कहा तूं मेरे साथ केवल चुप चाप चलता रह। चौकीदार को महाराजने जगाया। भाई ! हमें बाहर जाना है। आप दरवाजा खोल देंगे क्या ? चौकीदार ऊपर से नीचे देखा, फिर उसके मन में आया कि खोल देना चाहिये। अब वह ताली खोजने गया, इधर श्रीजी महाराज बड़ी जल्दी में थे उसे आने में देर देखकर ताला पर ज्यौं हाथ लगायें वह ताला खुल गया। चौकीदार से कहने लगे, लगता है यह ताला बिगड़ा है। पुराने जमाने का ताला हथोड़ा मारने पर जो नहीं टूटे, वह छूते ही खुल गया।

डुंगरजी तथा महाराज वहाँ से बाहर निकले। एक खेत में से पसार हो रहे थे, पुनः डुंगरजी बोले महाराज ! अभी भी अंधेरा है। श्रीजी महाराज ने कहा डुंगरजी। सत्य कह रहे हैं। अभी भी अंधेरा है। एक काम करते हैं। इस खेत की मिट्टी बहुत मुलायम है इसी में सोजाते हैं। गद्दा से भी अधिक आनंद आयेगा। डुंगरजी को हुआ कि महाराज मान तो गये। विछावन नहीं है तो : खेत की मिट्टी ही सही। वहीं दोनो सो जाते हैं। लेकिन डुंगरजीको नीद आगई, अब वे घर्रा खींचने लगे। जोरो से नाक बजने लगी, इधर महाराज तो परेशान। उस नाक की आवाज से वे सो नही पाये, बल्कि जब से डुंगरजी साथ आये तब से महाराज आधी रात है, अंधकार है। प्रभु खेत में उन्हें सोते हुए छोड़ कर चल दिये।

यदि सेवक अपना धर्म भूलता है तो यही स्थिति होती है। डुंगरजी को सोते हुये छोड़कर प्रभु अकेले चल दिये। डुंगरजी को सोने में आनंद आ रहा था। सेवक धर्म बड़ा कठिन होता है। अपने स्वामी के विचार को समझकर चलना सेवा धर्म है। डुंगरजी भक्त तो थे ही मुक्तात्मा भी थे, लेकिन ऐसे भक्तभी

उपदेश देने की कोशिष करते हैं परमात्मा साथ थे, फिर आधी रात ? नींद पूरी नहीं हुई ? इन सभी की चिन्ता लगी रही । यही मानव स्वभाव है । क्या सभा में नींद नहीं आती ? आती है । इसी तरह भगवान स्वामिनारायण साथ में हो तो भी सोने का मन हो ही जाता है । लेकिन यह हितकर नहीं कहा जायेगा । अन्यथा जैसे भगवान डुंगरजी को बीच में सोते छोड़कर चल दिये यही स्थिति आपकी भी हो सकती है. जो सोया वो खोया । बाद में जब डुंगरजी जागे तब महाराज वहाँ तो थे ही नहीं ? जगने के साथ ही महाराज को लगे खोजने । अब वे दौड़ते गाँव में गये संतो से पूछने लगे क्या महाराज यहाँ आये ? संतोने कहा नहीं वे अपने शयन कक्ष में होंगे । बाद में डुंगरजीने सभी स्थिति संतो को बताई और स्पष्ट हो गया कि महाराज मुझे दंडदेने के लिये ही यह सब कुछ किये हैं।

सेवक धर्म समर्पण पर आधारित है । इस में तर्क नहीं चलता । स्वामी की प्रसन्नता में उसकी प्रसन्नता है । डुंगरजी को तो खूब पश्चाताप होने लगा मानो उन्हें आज बहुत बड़ी सीख मिल गई है । श्रीजी महाराज की लीला को वांच कर क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि हम में कोई कमी है । इससे कुछ आपको अवश्य सीख मिलेगी ।

●

सेवा स्वयं करनी चाहिये

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

"कोण रे पुण्य विठ्ठलवर पामी
भले मळ्या जे रामना स्वामी ।"

पूर्ण पुरुषोत्तम अक्षरधाम के पति इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण जब इस धरती पर पधारे तथा जिसे मिले, उन सभी की कितनी बड़ी भाग्य होगी ।

भगवान स्वामिनारायण भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये धरतीपर पधारे, उस समय संतो ने उनके चरित्र को लिख लिया जो आज हम सभी के समक्ष प्रत्यक्ष दृष्टि गोजर हो रहा है । उस में से एक प्रसंग यहाँ लिख रहे हैं -

एकबार जीवाखाचरने श्रीजी महाराज से कहा कि महाराज ? आज मैं सभी संतो को भोजन कराना चाहता हूँ । मेरे यहाँ सभी संत आवें कथा-प्रवचन हो, आप का चरणारविंद मेरे घर पड़े और संतो को आप अपने हाथों से भोजन परोसे । यह निवेदन सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और हाँ कह दिये ।

अब जीवाखाचर जोरसोर से तैयारी में लग गये । अपने सगे सनेही जनों को भी दावत दिये ? इस में भक्तों को भी निमंत्रण दिया गया । सभी एकत्रित हुए, कथा-प्रवचन हुआ, अंत में संतो की पंगत लगी । उस समय महाराज बड़े आनंद के साथ संतो को लड्डू पिरसने लगे । अन्य भोजन को अन्य संत पिरस रहे थे । जीवा खाचर कुर्सी पर बैठकर यहां पानी बाकी है, यहाँ यह बाकी है, ऐसा आदेश करने लगे ।

यह सुनकर महाराजने कहा जीवा खाचर जब आप दूसरे से सेवा करायेगें तो आपको क्या पुण्य मिलेगा ? नारदजी को जब संतो की सेवा में लगाये तभी नारदजीको मुक्ति मिली । नारदजी भगवान के मन हो गये ।

यह वात भागवत के माहात्म्य में आती है, कि नारदजी एक दासी के पुत्र थे । वह दासी किसी शेठ के घर में काम करती थी । उस शेठ के घर एकबार संत पधारे । नारदजी माता के कहने से संतो की सेवा की । संत प्रसन्न हो गये और गुरुमंत्र दिये । उसी मंत्र के प्रताप से भगवान का साक्षात्कार हुआ, जिसके परिणाम स्वरुप नारदजी को भगवान का मन कहा गया । लेकिन जिस शेठ के घर महात्मा पधारे थे, उस शेठ को कोई जानता नहीं था वह कौन है । फिर भी वह चार महीने तक रखकर संतो को भोजन कराया । उसे क्या मिला, उसका पुण्य अवश्य मिला होगा, लेकिन सेवा करने वाले को तो जो मिलता था वह मिल गया । यह वात सुनकर जीवाखाचर के आँख की पट्टी खुल गयी और सेवा में लग गये । इसलिये "सेवा स्वयं करनी चाहिये ।"

भक्ति सुधा



श्री नरनारायणदेव की महिमा

- भावनाबहन कमलेशकुमार (खंबडिया-मोरबी)

मुमुक्षु जीवात्माओं के लिये श्री स्वामिनारायण भगवानने सर्व प्रथम श्री नरनारायण महाप्रभु को ही भेंट में दे दिया है। सत्संग में कल्पवृक्ष के समान हम सभी के लिये भगवान स्वामिनारायण मिले हैं। श्री स्वामिनारायण भगवानने अहमदाबाद में सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव का मंदिर बनवाकर अपने हाथों से ही उन्हें प्रतिष्ठित किया। इस सृष्टि की उत्पत्ति हुी उस समय से श्री नरनारायणदेव की उपासना प्रारंभ हुई थी। श्रीमद् भागवत, वायुपुराण, महाभारत, तथा विष्णुपुराण इत्यादि में श्री नरनारायणदेव को ही भरत खंड का राजा कहा गया है। ये ही मनुष्य मात्र के लिये आराध्य देव है। हम जिस देश में रहते है, उस देश का कानून-नियम तथा राष्ट्र ध्वज को मानना पड़ता है। जैसे अमेरिका में रहते हों तो वहाँ के कानून-नियम राष्ट्रध्वज को मानते है। इसी तरह धार्मिक दृष्टि से हम श्री नरनारायणदेव के देश में रहते हैं तो हम सभी के लिये आराध्य देव श्री नरनारायणदेव हैं, कितने लोग उन्हें छोड़कर अन्यत्र भजन करने जाते हैं। इनकी शरण छोड़कर अन्यत्र प्रयास करते हैं। वे मार्ग भूल गये हैं या वे अपनी निष्ठा या रीति रिवाज या कानून जो सामान्य व्यक्ति भी जानता है वे लोग भूल गये हैं। श्री नरनारायणदेव को छोड़कर अन्यत्र मस्तक नवाते हैं। इतिहास प्रमाण है कि हजारो वर्ष से भारत वर्ष में श्री नरनारायणदेव की उपासना प्रचलित है।

श्री नरनारायणदेव की महिमा का गुणगान करते हुये स.गु. वासुदेवानंद वर्णी श्रीमद् सत्संगिभूषण में लिखे है कि वेदव्यास मुनि ने श्री मद् भागवत के आदि, मध्य, अन्त में तथा महाभारत में एवं अन्य पुराणोमें श्री नरनारायणदेव की महिमा का ही गुणगान किया है। तथा श्री नरनारयणदेव ही मुख्य देव एवं उपास्य देव है। ऐसा वर्णन किया है। श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण भगवान से थोड़ा भी अलग नहीं है। जिसकी महिमा अक्षरधाम में निरंतर गाई जाती है। जिसने स्वामिनारायण भगवान की यथार्थ महिमा जानी हो, उसी के हृदय में श्री नरनारायणदेव की महिमा उतरती है, अन्य के हृदय में नहीं।

नरनारायणदेव स्थूल दृष्टि से भले अलग-अलग दिखाई देते हैं। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से अलग नही है दोनो एक ही हैं। भक्ति चिंतामणी में श्री निष्कुळानंद स्वामी इसका रहस्य समझाये हैं.

"छो तो एकने दिसो छो दो,
तेनो भेद जाणे जन कोय।"

हे प्रभु ! आप एक होकर भी दो स्वरुप में दर्शन देते हैं, इसका कोई भेद जान नहीं जा सकता। श्री नरनारायणदेव का दर्शन करते समय संस्कृत में एक वाक्य बोला जाता है। "श्री नरनारायणाय नमः" इस वाक्य में एक वचन का ही प्रयोग होता है। दर्शन में दो रुप दिखाई देता है। शास्त्र एक वचन से आदर देता है। श्री पुरुषोत्तम नारायण धर्मदेव से प्रतिष्ठित होकर श्री नरनारायणदेव के रुप में बदरीकाश्रम में तप करते हैं। यह बात स्वयं श्रीहरि अहमदाबाद के छठ्ठे वचनामृत में स्पष्ट किये है। श्री नरनारायणदेव को हम अपना स्वरुप मानकर अति आदरपूर्वक सर्व प्रथम अहमदाबाद में प्रतिष्ठित किया है. इसलिये श्री नरनारायणदेव को हमसे अलग अथवा लेश मात्र भेद नहीं मानना। स्वयं श्रीहरिने भी वचनामृतमें अपने इष्टदेव श्री नरनारायणदेव ऐसा कहकर खूब महिमा का गुणगान किये हैं।

एकबार इन्द्र को कुविचार आया और श्री नरनारायणदेव के तप में विघ्न करने के लिये कामदेव को भेंजे। आत्मा को जला देने वाला क्रोधभी जिसके निर्मल अन्तःकरण में प्रवेश नहीं करपाता है तो कामदेव कैसे प्रवेश कर सकता है।

सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव भगवान की महिमा बड़ी अद्‌भुत है। स्वयं श्रीजी महाराज ने वचनामृतमं कहा हैं कि इस संसार में दृढ ब्रह्मचर्य वाले एकमात्र श्री नरनारायणदेव ऋषि ही है।

उन्हीं परमात्मा का हमें आश्रय मिला है। इसलिये हमें भी निष्कामी होना चाहिये। स्त्रीरुपी माया को जीतने के लिये श्री नरनारायणदेव ऋषि के विना दूसरा कौन समर्थ है। अंत में श्रीजी महाराज के शब्दों में श्री नरनारायणदेव ही सभी अवतारों के कारण है।

•

माला फेरने की रीत

- जयश्री सुरेशकुमार झिंझुवाडीया (धांगध्रा)

कार्तिक शुक्ल नवमी के दिन श्रीहरि रात्रि के समय सभा में विराजमान थे। उस समय वासुदेवानंद वर्णीने श्रीहरि को प्रतिदिन मंत्रजप करने के विधिसुनाने को कही तो श्रीहरिने कहा -

हे वर्णी ! आचार्य महाराजश्री से जो दीक्षा प्राप्त किये हो, स्नान करके शुद्ध हो, एकाग्र मन वाले हों, चिंता तथा क्रोधसे रहित हों ऐसे पुरुष मंत्रजाप करने के योग्य है।

एक सौ आठ मनका वाली माला ही जप करने के लिये श्रेष्ठहैं। चौवन मनका बाली माला मध्यम है। सत्ताइस मनकामाला कनिष्ठ है। स्वस्तिक आसन पर बैठकर, सरल चित्त होकर, अपने हृदय में भगवान का ध्यान करते हुये गौमुखी में माला को रखकर जप करना चाहिये। एक-एक मनका फेरते हुए माला फेरना चाहिये। तर्जनी अंगुली को अलग रखकर मध्यमां अनामिका तथा अंगुष्ठ के सहयोग से माला फेरनी चाहिये। माला को दाहिने हाथ से फेरे लेकिन यह ध्यान रहे कि माला नीचे न गिरे। माला जपते समय बीच में नहीं बोलना चाहिये। यदि बोलते हैं तो खंडित कहा जायेगा और पुनः प्रारंभ से आरंभ करना चाहिये। यदि जप करते समय माला गिर जाय तो एक माला अधिक प्रायश्चित के लिये अवश्य करना चाहिये। माला को पृथ्वी पर नहीं रखना चाहिये। माला फेरते समय दाहिने हाथ को वारंवार हिलाना नहीं चाहिये।

मस्तक पर पगड़ी बांधकर, नीचे मुख करके, चोटी विना बांधे, स्नान विना किये, अपवित्र शरीर से, चिंता युक्तमन से, दूसरे से वात करते हुये, माला नहीं फेरनी चाहिये।

गोमुखी या वस्त्र से ढके विना माला नहीं फेरना चाहिये। आसन पर बैठे विना, पृथ्वी पर बैठकर चलते फिरते, सोकर, चप्पल, जूता पहनकर पैर पर पैर रखकर पैर फैलाकर, हंसते हुये, अगल बलग देखते हुये, इशारा करते हुये, माला नहीं फेरनी चाहिये। पापियों के साथ बैठकर माला नहीं फेरनी चाहिये। माला फेरने में निंद्रा महान विघ्न रुप है। इसलिये निद्रा को सावधानी पूर्वक जीतना चाहिये। अपने मन को नियन्त्रण में रखकर माला फेरे। मनका संयम, पवित्रता, त्याग, ये सभी जप की सिद्धि में कारण हैं।

जप करते समय परमात्मा की मूर्ति के सामने एकाग्र मन से देखते रहना चाहिये। जिस मंत्र का जप कर रहे हैं उसका अर्थघटन भी होना आवश्यक है। यदि मूर्ति के सामने नहीं है, अन्यत्र हैं तो मूर्ति का चिन्तन करते हुए जप करना चाहिये। जप करतेसमय यदि बिल्ली या मूषक का स्पर्श होजाय तो माला को वस्त्र पर रखकर आचमन करके, सूर्यनारायण का या श्रीहरि का दर्शन करके पुनः अवशिष्ट माला फेरनी चाहिये। नीच जाति का या अभक्ष्य वस्तु का स्पर्श हो जाय तो स्नान करके ही जप करना चाहिये। जप के तीन प्रकार बताये गये हैं। प्रथम वाचिक द्वितीत उपांशु तीसरा मानसिक। उच्चारण करके किया जाने वाला वाचिक, जो कनिष्ठ है। उपांशु अर्थातु कंठ में जप करना मध्यम है, मानसिक जप सबसे उत्तम है।

मानस जप श्रेष्ठ कहा गया है। परंतु उसके लिये मन की एकाग्रता परमावश्यक है। अन्यथा "माला तो कर में फिरे जीभ फिरे मुख माहिं" मन तो वेपरवाह है, वह कहीं घूमता रहेगा और माला आपके हाथ में ही रहजायेगी। इसलिये मन का केन्द्रित होना आवश्यक है।

•

??? प्रश्नपेटी ???

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ "आ मनुष्य देहमां आव्या त्यारे चौराशी लाख जातना में माँ-बापने आज्ञाने करीने विसार्या छे, तेम आ मनुष्य शरीरना जे माँ-बाप छे तेमने ज्ञान करीने विसारी देवा" यह आज्ञा किस वचनामृत में हैं ?

प्रश्न : २ मूली मंदिर में शिखर का काम बाकी था, उस समय आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीकी गादीवालाने अपने अलंकार (गहना) की पेटी भेंजकर ब्रह्मानंद स्वामी को क्या कहवाया था ?

प्रश्न : ३ प.पू. आदि आचार्य महाराजश्री कौन थे ? तथा उनका गादी अभिषेक कब हुआ था ?

प्रश्न : ४ अभय खाचर की पत्नी सोमादेवी तथा सुरप्रभा देवी किस की पुत्री थी ?

प्रश्न : ५ भाग्य विना भटकत फिरे, हुन्नर करत हजार। मुक्त कहे कैसे मिलें, जो न लिख्यो करतार ॥ यह साखी किसने लिखी ?

प्रश्न : ६ गुरु, देव तथा आचार्यश्री के दर्शनार्थ जब जांय तब कैसे हाथ नहीं जाना चाहिये, यह वात श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री के किस श्लोक में लिखी है।

प्रश्न : ७ के वर्या में तो रंग भर वहालाने, के लटकाला नंदलाला रे..... वर्या, इस कीर्तन के रचयिता कौन ?

नवम्बर-दिसम्बर २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम।

(१) स्त्री, धन तथा उत्तम भोजन ये तीनो मत्सर के हेतु है। जिसके पास ये तीनों न हो वहां मत्सर नहीं होता। महाराज कहते हैं लेने-देने वाले के बीच में जो रहता है वह मत्सर कहलाता है, यह वात कारियाणी के छठ्ठे वचनामृत में कही गयी है। (२) स.गु. मुक्तानंद स्वामी। (३) सं. १८७९ में पंचाला के झीणाभाई के दरबार में रात्रि के समय संतो के साथ रास रमे थे। (४) वह दतुअन पीलुवृक्ष (वरखड़ी) की थी। वह करजीसण में वाघ रोड़ा तालाब है। (५) श्रीहरि ने जेतलपुर में पांचवे वचनामृत में कहा है। (६) दास वासुदेवजी (पद-२..... वरणवुं वाला रे मूर्ति मंगलकारी)। (७) जेतलपुरधाम।

१. सांख्ययोगी शिल्पाबा - सुरेन्द्रनगर
२. माधवजी - आद्रोजा-मोरबी
३. कंचनबहन - रतनपर
४. ज्योत्सनाबहन मपाणी - जीरागढ
५. अंजनाबहन पटेल - नांदोल
६. सुभद्राबहन पटेल - कनीपुर
७. पटेल हार्द, हेली - नरोडा
८. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलाल
९. प्रफुलाबहन पटेल - उवारसद
१०. ज्योत्सनाबहन पटेल - आनंदपुरा
११. गंगाबहन - झुलासण
१२. भक्तिभाई पटेल - राणीप
१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण
१४. पटेल कोकिलाबहन - वडु
१५. पटेल शिल्पाबहन - दहेगाँव
१६. माणेकलाल - दहेगाँव
१७. वीणा बहन भावसार - अहमदाबाद
१८. अरविंदाबहन भावसार - अहमदाबाद
१९. सांख्ययोगी भारतीबा - हवेली
२०. सांख्ययोगी मंजूबा - हवेली
२१. कैलास बहन - दहेगाँव
२२. रेखाबहन पटेल - ऊंझा
२३. साकरबहन पटेल - नांदोल
२४. शर्मिष्ठाबहन सोनी - अहमदाबाद
२५. हसुबहन ठक्कर - इसनपुर
२६. विठ्ठलपरा अमरशीभाई - नवसारी
२७. गीताबहन - बापूनगर
२८. हर्षदकोलोनी स्वामिनारायण मंदिर
२९. वर्षाबहन सोनी -अहमदाबाद
३०. अशोकभाई पटेल - वडु
३१. मीनाबहसोनी - नरोडा

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धनुर्मास धुन

वर्ष में एकवार आने वाला धनुर्मास-हरिभक्तों के लिये विशेष भजन-भक्ति-नियम का मास है। कारण यह कि इस महीने में जगत के व्यवहारिक शुभ प्रसंग सभी बंद हो जाते हैं। इसलिये सभी को भजन करने का पूर्ण समय मिल जाता है। अपने सभी श्री स्वामिनारायण मंदिरो में महामंत्र धून करने के लिये प्रातःकाल बहुतायत में भक्तजन एकत्रित होते हैं। अपने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में तथा धर्मकुल की उपस्थिति में प्रातः ५-३० की मंगला आरती प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से उतारकर सभा मंडप में बैठने के बाद महामंत्र धून प्रारंभ होती है। इस धून में प्रायः नगर के आबाल वृद्ध नरनारी भाग लेते हैं। प.पू. गादीवालाजी की हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी नियमित धून में उपस्थित होकर बहनों को अलौकिक सुख प्रदान करती है। अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से धनुर्मास के धून का सुंदर आयोजन को. मुकुंद स्वामी, वी.पी. स्वामी, डी.के. स्वामी, विष्णु स्वामी इत्यादि संत मंडल के मार्गदर्शन में पार्षद तथा युवान हरिभक्त सेवा कार्य करते रहते हैं, जिस में विशेष रुप से बापूनगर के भक्तों की सेवा प्रेरणा रुप है। इस प्रसंग पर अनेको श्रद्धालु हरिभक्त दैनिक धून की सेवाधन भेंट करके अलौकिक लाभ लिये थे।

- कल्पेश पटेल

चंद्रासणा गाँव में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

श्रीहरि के समकालीन नंद संत पूर्णानंद स्वामी के मामा का गाँव चंद्रासणा, साणंद विरमागाम से उत्तर पांच किलोमीटर दूर है। स्वामी का जन्म मामा के घर में हुआ था। श्रीजी महाराज के मानुषी लीलाओं में चंद्रासणा गाँव के हरिभक्तों के कल्याणार्थ स्वामीने जीवन का शेष भाग गाँव में ही विताया था। उन्हीं के हाथों मंदिर का निर्माण हुआ था कि इस क्षेत्र में जो शरीर त्याग करेंगे उस समय महाराज पाँच सौ परमहंसो के साथ लेने आयेगे तथा मृत्यु का दिन एकादशी ही होगा। वह वचन आज भी सत्य दिखाई देता है। आज तक वहाँ किसी की अकालमृत्यु नहीं हुई है। सभी एकादशी में ही मृत्यु प्राप्त करते हैं।

ता. २६-११-०८ के दिन इस परम पवित्र चंद्रासणा गाँव के आमंत्रण पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। गाँव के भक्तोंने स्वागतार्थ खूब उत्तम व्यवस्था की थी। महाराजश्रीने मंदिर में आरती उतारकर भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

सभी भक्तों को महाराज का तथा स.गु. पूर्णानंद स्वामी का संस्मरण प्रवचन दरम्यान करवाया गया था। स्वामीने अंतिम प्रवचन में बताया कि महाराज पूर्णानंद स्वामी को लेने स्वयं पधारे थे। यही भगवान की लीला है। इस प्रसंग का आयोजन जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी तथा पूज्य श्यामचरण स्वामी इत्यादि संतोने किया था।

इस गाँव में अ.नि.प.पू.ध.धु. आचार्य वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री के पदार्पण के बाद आज वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सभी हरिभक्त दर्शन-चरण स्पर्श का लाभ लिये थे।

- चिमनभाई पटेल भातवाला

हिंमतनगर का १९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाद एवं स्वा. हरिजीवनदासजी की प्रेरणा से हिंमतनगर मंदिर का १९ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री भी पधारे थे। चिंतामणी के समान चमत्कारी मूर्ति श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक किये थे। इसके बाद अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। यजमान श्री बाबूलाल सोनी परिवारने पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। अंत में पूज्य बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

आभार विधियजमान देवेन्द्रभाई सोनीने किया था। सभा संचालन मंहत स्वामी हरिजीवनदासने किया था। अंत में सभी महाप्रसाद लेकर विसर्जित हुए थे।

- श्री न.ना.देव यु. मंडल

जेतलपुर धाम में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

जेतलपुर धाम में विराजमान महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में असलाली गाँव की सत्संगी महिलाओं द्वारा आयोजित तथा असलाली के श्री मणीभाई भाईलालभाई पटेल के यजमान पद ता. ४-११-०८ से १-११-०८ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया था। जिसके वक्तापद पर श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय के संचालक शा. स्वामी हरिओमप्रकाशदासजी थे। इस प्रसंग पर महिला मंडल के प्रेमाग्रह पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी एवं प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी तथा प.पू.श्री राजा इस अवसर पर पधाकर अलौकिक सुख प्रदान किये थे। पारायण प्रसंग पर श्रीकृष्ण प्रागट्योत्सव तथा रुक्मिणि विवाह का उत्सव मनाया गया था। यजमान परिवार द्वारा सात दिन तक महाप्रसाद की व्यवस्था की गयी थी। पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पूर्णाहुति की आरती

उतारकर सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग का सुन्दर आयोजन के.पी. स्वामीने किया था। धाम-धाम से संत तथा यजमान परिवार के सगे संबंधी पधारकर सुंदर लाभ लिये थे। *- पुजारी भक्ति स्वामी*

विसनगर में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

श्रीहरि के प्रसादी के गांव (विसनगर) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री की आज्ञा से पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. दलपतभाई मंगलदास भावसार के स्मणार्थ उनके परिवार की पुत्री जागृतीबहन तथा हसुमती बहन की तरफ से ता. २-११-०८ से ता. ८-११-०८ गुरु पू. पी.पी. स्वामी के शिष्य भक्तिनन्द स्वामी संहितापाठ पर एवं वक्तापद पर स्वामी उत्तमप्रियादसजी विद्यमान होकर कथा का रसपान कराये थे । कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं रुक्मिणीविवाह धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिये थे। यजमान परिवार के आमंत्रण पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किये थे।

पूर्णाहुति के समय प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी बहनो के आमंत्रण पर पधारी थी। यजमान परिवार की बहनो ने तथा अन्य बहनो ने दर्शनपूजन का लाभ लिया था । इस प्रसंग पर धाम-धाम से संत पधारे थे। इस गाँव के हरिभक्त तथा युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । सभी हरिभक्त कथा श्रवण का लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाये थे। *- महंत के.पी. स्वामी*

श्रीजी महाराज के प्रसादी के काणोतर गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर धाम के संतवर्य पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्रीजी महाराज के प्रसादी के काणोतर गाँव में ता. ९-११-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय खूब उत्तम व्यवस्था के साथ स्वागत किया गया था । उसके बाद तुलसी विवाह के यजमान श्रीमोतीभाई भूराभाई को आशीर्वाद दिये थे। वहाँ से प.पू. आचार्य महाराजश्री शियाळ गाँव में पधारे थे । वहाँ प.भ. अरविंदभाई कानजीभाई के नूतन मकान में पदार्पण करके हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । वहाँ से भी बगोदरा गांव में पधारकर श्री रोहितसिंह मंगलसिंह के यहाँ पदार्पण करके आशीर्वाद देकर स्वस्थान पधारे थे। - *महंत के.पी. स्वामी, जेतलपुर*

अपने शिक्षण संस्था का समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज केळवणी ट्रस्ट संचालित तेजेन्द्रप्रसादजी एज्युकेशन रिसर्च फाउन्डेशन (टर्फ) स्कूल की माध्यमिक शाला नारायणपुरा में S.V.S. कक्षा के गणित-विज्ञान प्रदर्शन के अपने प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से खुल्ला कर दिया गया था। संस्था के मानद् मंत्री शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी इस प्रसंग पर उपस्थित थे।

इस विज्ञान मेला में करीब ११० विद्यार्थी तथा ५५ अध्यापक भाग लिये थे। इस प्रसंग पर २००० से अधिक विद्यार्थी तथा ५०० से अधिक पेरेन्टस विज्ञान मेला का निरीक्षण किये थे। *- आचार्यश्री, टर्फ माध्यमिक शाला*

कपडवंज मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. शास्त्री स्वा. मुकुन्दप्रसाददासजी (गढपुर) के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्षय में ता. २०-११-०८ से २२-११-००८ तक त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग तथा त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवद् दशम स्कंधपारायण स.गु. शा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुआ । ता. २२-११-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उस समय ग्रामवासियों ने भव्य स्वागत किया था । बाद में पूज्य आचार्य महाराजश्री ने नूतन मंदिर में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव की चित्र प्रतिमा तथा श्री गणपतिजी तथा श्री हनुमानजी महाराज की प्राणप्रतिष्ठा करके आरती उतारी थी । जिसका दर्शन करके हजारों भक्त धन्यता का अनुभव किये थे । कथा की पूर्णाहुति करके सभा में पधारे थे, उस समय यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्जन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

इस उत्सव में प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री ने पधारकर हरिभक्तों को दर्शन-आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था। बहनों को दर्शन आशीर्वाद का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के प्रतिनिधिउन्हीं के शिष्य स्वा. धर्मकिशोरदास, वड़ताल मंदिर के मुख्य को. बापू स्वामी, कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी इत्यादि विद्वान संत प्रसंगोचित प्रवचन किये थे।

जेतलपुर से महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, अहमदाबाद से स.गु. जगतप्रकाशदासजी इत्यादि संत पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे। समग्र प्रसंग के आयोजन में स.गु. मुकुंद स्वामी (गढडा) का पूर्ण योगदान था। इनके साथ में स.गु.स्वा. विष्णुप्रसाददासजी थे।

अंत में समस्त सभाजन को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आशीर्वाद में यह भी कहा कि आप सभी नरनारायणदेव का होकर रहेंगे तो सुखिया बनेंगे । इसके साथ मंदिर में प्रतिदिन दर्शन करने की आज्ञा भी दिये थे । सभा संचालन शा. आनंदजीवनदासजीने किया था। *- शा. डी.के. स्वामी*

लवारपुर में कथा-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स.गु.शा. नारायणवल्लभदासजीकी प्रेरणा से यहाँ के अ.नि.प.भ. केशवलाल बेचरदासजी के स्मरणार्थ ४-११-०८ से ८-११-०८ के वक्तापद पर कथा पारायण संपन्न हुआ था। जिसके यजमान श्री दिलीपभाई केशवलाल पटेल

ने संपूर्ण व्यवस्था की थी । ता. ८-११-०८ के दिन पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगमन पर शोभायात्रा के साथ उत्तम स्वागत किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में पधारे थे । यजमान परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । संतो के प्रेरक प्रवचन के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । बहनों के विशेष आग्रह पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी भी पधारकर सभी बहनों को सुख प्रदान की थी । सभा संचालन शा. आनंदजीवनदासजीने किया था ।

- स्वा. धर्मकिशोरदासजी

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में नूतन वर्ष के प्रारंभ में श्री घनश्याम महाराज के समक्ष विविधप्रकार के पक्वान का अन्नकूट समर्पित करके भोग लगाया गया था। देवोत्थानी एकादशी के दिन चातुर्मास की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में शाकोत्सव करके पांच प्रकार की आरती का उत्सव किया गया था । यहाँ के महंत स्वामीने सुन्दर आयोजन किया था ।

- प्रवीणभाई उपाध्याय

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में तुलसी विवाह

सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में तथा शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. ९-११-०८ के दिन भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था । इस कार्यक्रम में हजारों हरिभक्त भाग लिये थे । वरपक्ष के यजमान श्री जल्पेशभाई नरेशभाई भावसार थे । कन्या पक्ष के यजमान नरेशभाई नटवरलाल भावसार थे । प.पू. आचार्य महाराज भी इस अवसर पर पधारकर यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । -.

गोपाल भगत पुजारी

विहार गाँव में पारायण

श्रीजी महाराज के प्रसादी के विहार गांव में सर्वावतारी श्रीहरि की पूर्णकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की कृपा से एवं अ.नि. जोगी स्वामी, शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अ.नि. चंचलबहन जोईताराम पटेल तथा अ.नि. जोईताराम परसोत्तमदास पटेल के आशीर्वाद से उन्ही के पुत्र श्री कांतिभाई जोइताराम पटेल परिवार की तरफ से विहारगाँव में ता. २-११-०८ से ६-११-०८ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण का पंचाहन पारायण का आयोजन किया गया था । जिसके वक्तापद पर शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने सुमधुर शैली में कथामृत पान कराया था। संहितापाठ के वक्ता शा.स्वा. भक्तिस्वामी (अमेरिकावाले) थे ।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रसन्न किये थे ।

यजमान अ.सौ. ललिताबहन कांतिलाल पटेल तथा समस्त बहनों के आग्रह पर प.पू.अ.सौ. गादीवाला तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । ता. ६-११-०८ को पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य महाराजश्री के आगमन पर भव्यातिभव्य स्वागत किया गया था । मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे, उस समय यजमान परिवार ने आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त किया था । संतो की प्रेरक प्रवचन के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया था । इस प्रसंग का सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था । आयोजन की व्यवस्था सूर्यप्रकाश स्वामीने किया था ।

- ब्र. राजेश्वरानंदजी श्री नरनारायणदेव के पुजारी

नवावाड्ज मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रतिदिन ७ बजे से १२ बजे तक समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । १०१ भाई-बहनो ने लाभ लिया था । जिसके मुख्य यजमान श्री भीखाभाई गोविंदभाई परमार थे । ता. १-१२-०८ को सुबह में शास्त्रो का पारायण, धून, कीर्तन इत्यादि का कार्यक्रम रखा गया था ।

- शंभुभाई पटेल

बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन किया गया था । शहर के राजमार्गो पर ठाकुरजी का जुलूश निकाला गया था । इसके बाद विवाह विधिहुई थी । जिसमें संत मंडल तथा हरिभक्त भाग लिये थे । सतत् दो दिन तक भक्तों के लिये प्रसाद की व्यवस्था की गई थी । सभा में स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने तुलसी वीवाह की महिमा समझाई थी ।

- रमेश भगत

अपने आगामी मेडिकल केम्प

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव कांकरिया मंदिर में ब्रह्म भोज तथा अपने आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की जन्म जयंती के उपलक्ष्य में कुल ७ मेडिकल केम्प ता. २२-२-०९ रविवार को रखा गया है ।

१. हृदय रोग, डायाबीटीश, ब्लडप्रेशर के रोगियों के लिये एम.डी.फीजीशियन डोक्टर सेवा करेंगे ।
२. पथरी, एपेन्डीस, केन्सर, थाईरोड तथा अन्य रोगों के लिये एम.एस. डो. निदान करेंगे ।
३. हड्डी के रोग, फेक्चर इत्यादि से सम्बन्धित रोगों के लिये ओथोपेडिक सर्जन सेवा करेंगे ।
४. स्त्री रोगों के लिये एम.डी. गायनेक लेडीज डोक्टर सेवा करेंगी ।
५. नाक, कान, गला से सम्बन्धित रोगो के लिये इ.एन.टी. सर्जन सेवा करेंगे ।

६. आँख के रोगों के लिये ओप्थोलोजिस्ट सर्जन सेवा करेंगे।
७. चर्म रोगो के लिये निष्णात डोकटरों द्वारा सेवा की जायेगी।
सभी रोगों के लिये विषय निष्णात डोक्टरर की टीम नि:शुल्क सेवा करेंगी। जिस में काडियो ग्राम-आँख कान, इत्यादि विना कीस में निकालकर दिया जायेगा।

स्थल - श्री स्वामिनारायण मंदिर, रामबाग, कांकरिया
मारुती होल, अमहादाबाद,
ता. : २२-२-०९ ● समय : प्रात: ९-१२
आयोजक डो. रमेशभाई परीख (कांकरिया, स्वा. मंदिर)

रामपुरा भंकोडा

श्री स्वामिनारायण महाप्रभु ने जिस भूमि को अपने चरणारविंद से पवित्र किया था, जिस पत्थर पर बैठकर स्नान किया था, भोजन किया था, उसी प्रसादी के स्थल के दर्शन के साथ धनुर्मास के प्रात: ५-३० से ७-०० बजे तक आरती, धून, किर्तन, कथा-प्रवचन भाई-बहन सभी एक साथ करके सत्संग का अलौकिक आनन्द लेते हैं। बाद में प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव करते हैं।

- अरजणभाई गो. मोरी

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर

कार्तिक शुक्ल-१५ देव दिपावली के शुभ दिन अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के दर्शनार्थ पधारे थे।

इस प्रसंग पर स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी सभा मंडप में संत हरिभक्तों की विशाल सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें मूली मंदिर के महंत स्वामी तथा विद्वान संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था। समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। चराडवा के महंत स्वामी शा. हरिप्रकादासने सभा संचालन किया था। *- भरत भगत*

सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में तीसरा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ८-११-०८ से ता. १४-११-०८ तक श्रीमद् भागत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था। जिसके वक्ता शा. विश्वविहारीदासजी थे। यजमानश्री रसिकभाई प्रागजीभाई चंदाराणा थे। पाटोत्सव के यजमान सां. कमलाबा, सां.कोकिलाबा तथा उषाबा की प्रेरणा से श्रीमती कीर्तिबहन कांतिलाल शाह इत्यादि लोग थी।

इस प्रसंग पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, अन्नकूट तथा तुलसी विवाह धूमधाम से मनाया गया था।

ता. १४-११-०८ के प्रात: ७-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक संपन्न हुआ था। बाद में हरियाग की पूर्णाहुति करके मुख्यद्वार का पूजन करके कथा की पूर्णाहुति करके सभा में विराजमान होकर सभीको हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। पाटोत्सव के प्रसंग पर धाम-धाम से संत पधारे थे। सभा संचालन भक्तिनंदन स्वामीने किया था। समग्र आयोजन शा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में श्री न.ना.युवक मंडल ने किया था। पु. विश्वस्वरुपदासजी, भक्ति स्वामी तथा कनु भगतने अच्छी सेवा की थी। बाल सभा का कार्यक्रम अच्छा था।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

स.गु. देवानंद स्वामी के जन्मस्थान बड़ोल गाँव में सत्संग सभा

श्रीजी महाराज के चरणों से अंकित कवि सम्राट देवानंद स्वामी के जन्म स्थल मूली के अन्तर्गत तथा समस्त धर्मकुल के आश्रित ऐसे बड़ोल गांव में ता. २५-११-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। मूली मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजीने सुन्दर सभा का आयोजन किया था। इस प्रसंग पर लीमड़ी के धारा सभ्य किरीटसिंह राणा प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शनार्थ पधारे थे। प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने भगवान के धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। अन्य संत नारायणप्रसाददासजी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स्वा. माधव स्वामी, किरीटभाई (मंत्रीश्री) तथा लाभुभाई इत्यादि लोगों ने प्रसंगोचित प्रवचन किया था। अंत में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

सभा संचालन चराडवा के महंत स्वामीने किया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से पू. श्याम स्वामी, वी.पी. स्वामी मूली से लक्ष्मीप्रसाददासजी, अनु स्वामी, चंदु भगत इत्यादि लोग उपस्थित थे। *- बूटीया रणछोड भाई*

टींबा गाँव में सत्संग सभा

ता. १-१२-०८ के दिन मूली श्री राधाकृष्णदेव मंदिर के अन्तर्गत टींबा गाँव में प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे उस समय उनका दिव्य स्वागत किया गया था। मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में पधारे थे। सभा में पू. पी.पी. स्वामी जी के सुमधुर कंठ से कथा का श्रवण किया था। बाद में पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर मूली से लक्ष्मीप्रसाददासजी पधारे थे। सभा संचालन स्वा. हरिप्रसाददासने किया था।

- को. स्वामी मूली

बांकानेर श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) स्वात पूजन

मूली मंदिर के अन्तर्गत बांकानेर में भूकंप में नष्ट प्राय मंदिर के पुन: नूतन निर्माण के लिये ता. ९-१२-०८ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्रीने

अपने हाथों से खात पूजन किया था। इस प्रसंग पर मूली के महंत स्वामी तथा अन्य संतोने सेवा करने का आह्वान किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर का निर्माण अति शीघ्र पूर्ण हो ऐसा आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा. हरिप्रकाशदासने किया था

- भरत भगत

लीबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणासे महंत भक्तवत्सलदासने हरिभक्तों के सहयोग से कथा प्रवचन धून का सुंदर आयोजन किया था।

- वंदनप्रकाशदास

घनश्याम नगर (ता. हलवद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मार्गशीर्ष शुक्ल-४ को वचनामृत पारायण तथा कीर्तन-भजन समूह में किया गया था।

- गोरधनभाई कणझरीया

ओलपाक

श्रीहरि के अलौकिक चरणों से अंकित ऐसी पवित्र भूमि-ओलपाड में हरिभक्त स्थायी हुये हैं। जिन्हे मूली के राधाकृष्णदेव तथा श्री नरनारायणदेव गादी के प्रतिनिधिहै । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रति गुरुवार को सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है। जिसमें मूल संप्रदाय तथा धर्मकुल की महिमा को समझाया जाता है ।

- विवेक वरु ओलपाड

विदेश सत्संग वृत्तान्त

चेरीहील श्री स्वामिनारायण मंदिर (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. विश्वप्रकाशदास की प्रेरणा से अपने मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री का प्रागट्योत्सव विजया दशमी के दिन धूमधाम से मनाया गया था । विश्वप्रकासदासजीने धर्मकुल की महिमा को अच्छी तरह समझाया था। सभी हरिभक्तोंने महाराजश्री की चित्रप्रतिमा का पूजन अर्चन किया था। नूतन वर्ष के दिन मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव, श्री रेवती बलदेवजी, श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज के समक्ष अन्नकूट का भोग लगाया गया था। दोपहर १२-०० बजे अन्नकूट की आरती का दर्शन भक्तों ने किया था। इस अवसर पर गांधीनगर वाले ध्यानी स्वामी संतो के साथ पधारे थे। सभी लोग अन्नकूट का प्रसाद ग्रहण किये थे। मंदिर के प्रेसीडेन्ट श्री राजूभाई ने आभारविधिकी थी। -

कार्तिक पटेल, वडवाला

अमेरिका में अपनी "सेवा" संस्था द्वारा मेडिकल हेल्थ फेर का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजी की आज्ञा से आई.एस.एस.ओ. सेवा मेडिकल हेल्थ क्लिनिक की तरफ से बोस्टन मंदिर में बोनमेरो का चेक अप करके डोक्टरोने अमूल्य सेवा की थी। जिसमें सैंकडों रोगी लाभ लिये थे। केनेडा, टोरन्टो इत्यादि मंदिरो में डोक्टरोने सेवा की थी। जिस में सभी सेवा फ्री हुई थी।

पारसी पेनी न्युजर्सी मंदिर के भूमि पूजन प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी की उपस्थिति में ब्लड डोनेशन केम्प का आयोजन किया गया था। इस सेवा कार्य से पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे । इस तरह सेवा संस्था द्वारा आई.एस.एस.ओ. के प्रत्येक चेप्टरों में सेवा कार्य हो रहा है।

- प्रविणभाई शाह

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में नूतन मंगल दिन के प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट का भोग लगाया गया था । महंत स्वामीने १०८ दीपक की आरती तैयार करके ठाकुरजी की आरती की थी। चोपड़ा पूजन रोहितभाई पंड्याने करवाया था।

सायंकाल पूज्या बड़ी गादीवालाजी पू. बिन्दुराजा, श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार दर्शन् के लिये पधारे थे।

प्रबोधिनी एकादशी के दिन भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर अनेकों भक्त उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लिये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति अच्छी चलंती है।

- प्रवीणभाई शाह

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O., U.S.A.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से १२ अक्टूम्बर रविवार को सायंकाल ३-३० से ८ तक सर्वनापार्क कोम्युनिटी सेन्टर होल में कथा-प्रवचन कीर्तन-भजन, नित्य-नियम-आरती समूह में की गई थी। सिद्धेश्वर स्वामीने वचनामृत कथा का रसपान फोन पर करवाया। प.पू. आचार्य महाराजश्रीके प्रागट्योत्सव के दिन विजया दशमी को उन्ही के छायाचित्र का पूजन अर्चन किया गया था।

२५ अक्टूबर शनिवार को सायंकाल ५-४५ से ८-५ तक वर्जीनीया स्टेट के हरन्डन में क्लब हाउस कोम्पुनिया होल में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। २ नवम्बर को ३ बजे से ८ बजे तक अन्नकूट की आरती करके न्यूजर्सी से स्वा. व्रजवल्लदासने भगवान श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था। हरि भक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग अच्छा चल रहा है।

- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (I.S.S.O., U.K.)

यहाँ के लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री बड़े मह्मराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की कृपा से एवं स्वा. केशवचरणदासजी स्वा. घनश्यामदासजी की प्रेरणा से ता. ७-१२-०८ के दिन ४ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई थी। अ.नि. श्रीदामजीभाई जेरामभाई काचा के स्मरणार्थ यजमान बनकर लाभ लिये थे। इस प्रसंग पर विशाल संख्या में भक्तजन उपस्थित होकर धून का लाभ लिये थे।

- मंत्री कानजीभाई मालवी

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (I.S.S.O., U.K.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से स्ट्रेधाम मंदिर में अन्नकूट के अवसर पर नानाविधव्यंजन प्रभु को अर्पित किया गया था। ता. ९-११-०८ को तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था। जिसके यजमान श्री हसमुखभाई डाह्याभाई पटेल परिवार तथा श्री विष्णु भगवान के यजमान श्री मनुभाई डाह्याभाई वाणंद परिवार थे। धूम-धाम के साथ तुलसी विवाह संपन्न हुआ था, सभी विवाह में भाग लेकर धन्यता का अनुभव किये थे।

- जयेश वाघेला

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलीया)

सीडनी श्री स्वामिनारायण मंदिर में नूतन वर्ष के दिन ठाकुरजी को अन्नकूट प्रसाद अर्पण किया गया था। सभा में श्री घनश्यामभाईने अन्नकूट का रहस्य समझाया था। ४०० जितने हरिभक्त उपस्थित होकर लाभ लिये थे। इस प्रसंग के यजमान मायाबहन महेन्द्रभाई अमीन परिवार तथा श्री बिपीनभाई मिस्त्री परिवार थे।

ता. ९-११-०८ एकादशी की सभा श्री मुकेशभाई अमीन परिवार की तरफ से हुई थी। ता. १९-११-०८ के दिन तुलसी विवाह भव्य रीति से मनाया गया था। सभी हरिभक्त तुलसी विवाह का दर्शन करके धन्य हो गये थे।

- तेजस बी. पटेल

पर्थ ओस्ट्रेलिया

अपने श्री नरनारायणदेव गादी के कच्छ निवासी निष्ठावान हरिभक्त अध्यक्ष श्री कांतिभाई विश्राम गोपाल पिडोरीया, मंत्रीश्री, खजानची, ट्रस्टी मंडल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को नम्र प्रार्थना के साथ विज्ञप्ति कर रहे हैं कि -

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा आपके आशीर्वाद से यहाँ पर सभी हरिभक्त मिलकर सत्संग करते हैं। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का कृपा पत्र मिलने पर सभा में पढा गया था। पत्र सुनकर सभी भाव विभोर हो गये थे। आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जन्म दिन (द्विशताब्दी) "धर्मकुल वंदना महोत्सव" का विज्ञापन सभा में किया गया था। इस उत्सव को धूमधाम से मनाने का संकल्प किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री यहां के सत्संगियों को आप ऐसा आशीर्वाद दे कि यहाँ का सत्संग खूब फूलेफले।

नूतन वर्ष के सायंकाल ६ बजे से रात्रि को १० बजे तक अन्नकूट का उत्सव लेस हेन्समेन होल में मनाया गया था। ठाकुरजी के सिंहासन को खूब सजाया गया था। ठाकुरजी को नाना प्रकार के व्यंजनो का भोग लगाया गया था।

यहाँ पर प्रथमवार तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था। सभी इस प्रसंग पर एकत्रित होकर आनंद का लाभ लिये थे। यहाँ का शिखरी मंदिर अतिशीघ्र पूर्ण हो ऐसी सभी को श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री में श्रद्धा है।

तुलसी विवाह में वरपक्ष के यजमान श्री धनजीभाई हालाई (कच्छ) परिवार तथा कन्या पक्ष के यजमान श्री हीरजी कानजी वेकरिया (कच्छ) परिवारने लाभ लिया था। इस विवाह प्रसंग को बड़े उत्साह के साथ संपन्न किया गया था। महिलायें गीत गाने के लिए भाग ली थी। यह कार्यक्रम प्रात: ७ बजे से दोपहर १२ बजे तक चला था। सभी के लिये प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी।

समग्र कार्यक्रम प्रमुख श्री कांतिभाई गोपाल तथा मंत्रीश्री मनजीभाई भंडेरी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।

- मंत्रीश्री पर्थ सत्संग समाज

धर्मवंशी की कृपा-चमत्कार

अपने मूल संप्रदाय में श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान का चमत्कार कुछ और ही है। जैसे नया जीवन प्राप्त करना, अकस्मात से रक्षा होना, पुत्र प्राप्ति, इत्यादि प्रसंग से हम सभी परिचित है। भरी सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री कहते हैं कि जो श्री नरनारायणदेव की निष्ठा रखेगा उसका सर्वविधकल्याण निश्चित है। कई लोगों के कैन्सर जैस रोग ठीक हुये हैं। यह चमत्कार श्रीजी के पुत्र तथा श्री नरनारायणदेव गादीपति ही दिखा सकते हैं। इनके सामर्थ्य को सामान्य व्यक्ति क्या समझ सकता है।

वर्षो से शिकागो में रहने वाली श्री शशीबा नारायणभाई पटेल के जीवन में जो घटना बनी वह जीवन में उतारने लायक है। इसमें मूल कारण श्री नरनारायणदेव में तथा गादी के प्रति निष्ठा है। शिकाको से १० वर्ष पूर्व ब्रिटिश एरवेझ में यू.के. के हिथ्रो एरपोर्ट से मुंबई आये यहाँ फ्लाईट लेट होने से अहमदाबाद की फ्लाईट छूट गई, अब पति-पत्नी बहुत परेशान हुए। उस समय वलसाड से उन्हे दामाद बाम्बे लेने आये थे, वे बहुत परेशान थे, संयोग से उसी समय प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ केनिया से मुंबई एरपोर्ट पर आये। शशीबा दूर से दर्शन करके दामाद से आशीर्वाद लेने को कहीं दामाद जाकर प्रणाम किये और फ्लाईट छूट गई ऐसा कहे तो

महाराजश्री ने कहा कि मैं जिसमें जा रहा हूँ उसीमें आपका टिकर हो जायेगा। हुआ ऐसा ही, कोई एक टिक कैन्शिल हुआ, तथा दूसरा कोई आया नहीं। इस तरह शशीबा तथा नारायणभाई दोनो जन महाराजश्री की फ्लाईट में साथ ही अहमदाबाद आ गये।

दूसरी घटना यह है कि एक वर्ष पूर्व शिकागो में शरीर में कोई तकलीफ होने से उसका चेकअप कराया गया तो पता चला कि केन्सर है। केन्सर का नाम सुनते ही डर गई। लेकिन शशीबा सर्वोपरि श्रीहरि में तथा उनके पुत्र प.पू. आचार्य महाराजश्री में अटूट श्रद्धा रखती थी, इसलिये परिवार वालो से कही कि हमें इसकी कोई चिंता नही, मैं जब यहाँ से जाऊँगी तो भगवान के धाम में ही जाऊगी, इसलियें श्री स्वामिनारायण म्युझियम में १ लाख रुपये की सेवा करना चाहती हूँ। इसके साथ श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद तथा जेतलपुर में रसोई देना चाहती हूँ। आप लोग मेरी यह इच्छा पूरी करना। मैं पूज्य बड़े महाराजश्री में श्रीजी महाराज का दर्शन करती हूँ। वे ही मेरी रक्षा करेंगे। अन्तर की आवाज पू. बड़े महाराज को सुनाई दीया होगी ? इसलिये आपरेशन के बाद नोर्मल रिपोर्ट आगया, डोक्टरों को बड़ा आश्चर्य हुआ, यह एक चमत्कार जैसे लगा। इसी बीच शशीबा तथा श्री नारायणभाई दोनो शिकागो से पौत्र के विवाह प्रसंग पर अहमदाबाद आये . सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके भेंट-सौगात देकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम में भेंट देने गये, उस समय श्री नारायणभाई ने पीछे की समग्र घटना कह सुनाया। आप यदि नजदीक में हों तो शशीबा को मिलना, इस समय नवा वाडज में रहती है। थोड़े समय बाद शिकागो जायेंगी वहाँ भी मंदिर में वे मिलेगी। आप को धर्मकुल के प्रति कितनी निष्ठा है यह ख्याल आजायेगा। इस तरह प.पू. बड़े महाराजश्री के अनेकों चमत्कार हैं। सुने हैं और देखे भी है।

- प्रवीणभाई पटेल वडुवाला

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : गं.स्व. अश्रुमतीबहन नवीनचंद्र वाडीलाल चौकसी श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

मुंबई-मुलुंड : श्री हीरजीभाई चौहाण (उ. ७३ वर्ष) (जामसर-मूलीदेश) ता. ६-११-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं वे श्री नरनारयणदेव गादी तथा मूली श्री राधाकृष्णदेव एवं धर्मकुल की निष्ठावाले थे।

विसनगर : श्री सहजानंद किशोर मंडल के प्रमुख अमितभाई सथवारा के पिताजी श्री कनुभाई जोइताराम सथवारा ता. १०-१२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

रामपरा (ता. वढवाण मूलीदेश) : श्री करशनभाई डाह्याभाई पटेल ता. १२-१२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

वडु (ता. कडी) : श्री धीरजकुमार विष्णुभाई पटेल (उ. १८ वर्ष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं। उनके परिवार को श्रीहरि धैर्य दें।

बडोल (भाल) : श्री रमेशभाई नारणभाई बूटीया ता. २७-१२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

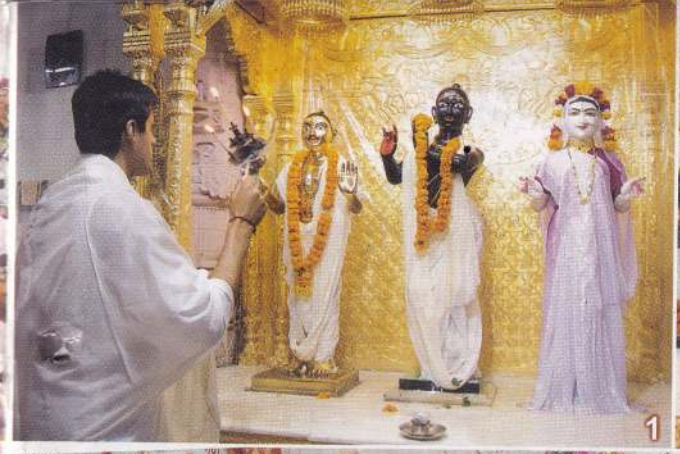
अहमदाबाद : श्री विनयकांत हीराभाई पटेल की धर्मपत्नी शारदाबहन ता. ७-१०-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

पाटना कुवा (ता. दहेगाँव) : श्री विपुलकुमार वसंतकुमार सोनी (उ. १९ वर्ष) ता. ६-१२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

बापुनगर-अमहादाबाद : श्री बाबुभाई टपुभाई आंसोदरिया (डी-लाईट रेफ्रिजरेशन) की माता पुरीबहन टपुभाई आंसोदरिया (उ. ८५ वर्ष) ता. १५-१२-०८ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अहमदाबाद : श्री सुरेन्द्रभाई कांतिलाल दवे ता. २१-१२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।





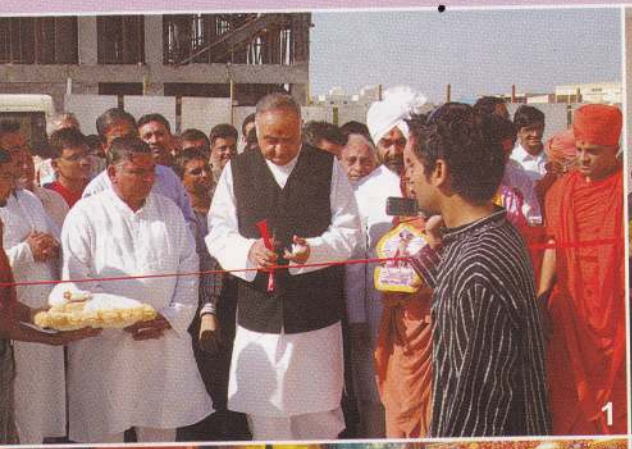


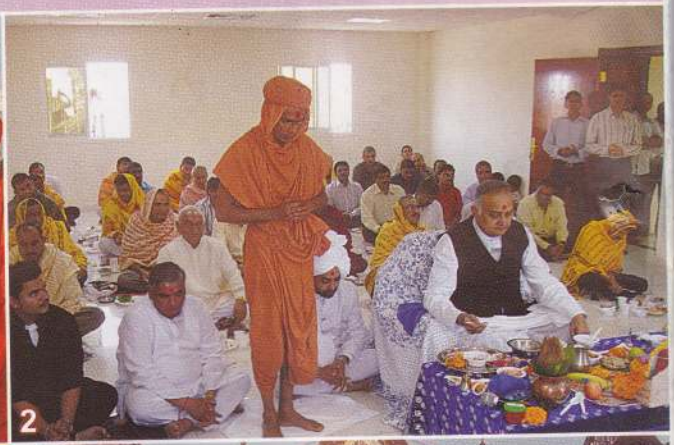




(१) सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (२) लींवड़ी मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का अन्नकूट दर्शन । (३) विहार गाँव में श्री कांतिभाई जे. पटेल द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर उनके पुत्र को आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में देवप्रकाशदासजी तथा आरती उतारते हुये परिवारजन । (४) जेतलपुरधाम में पारायण प्रसंग पर व्यास पीठकी आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (५) बद्रिनाथ धाम मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुये शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा देव स्वामी एवं यजमान हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

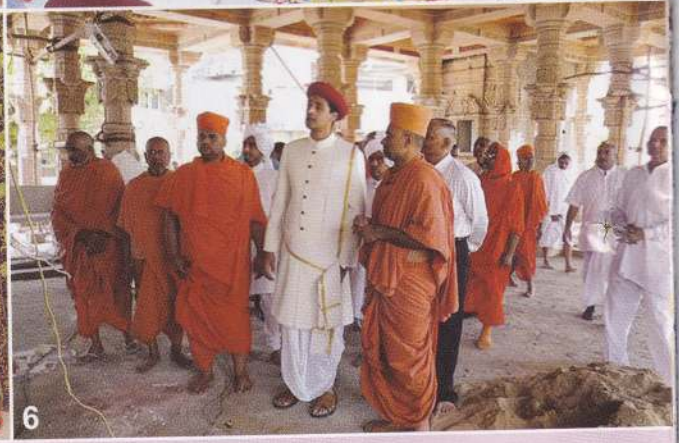

1


2


3


4


5


6

(१) दुबई में श्री नरनारायणदेव गादी के (मूली देश हालारके) श्री भीमजीभाई टांक की फेक्टरी का उद्घाटन करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा साथ में संत एवं श्री भीमजीभाई । (२) दुबई में श्री भीमजीभाई टांक की नूतन ऑफिस में पूजा में विराजमान प.पू. बड़े महाराजश्री एवं लाभ लेते हुये संत हरिभक्त । (३) चेरिहील (अमेरिका) मंदिर में अन्नकूट दर्शन । (४) सीडनी (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में अन्नकूट दर्शन । (५) कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में दर्शन देते हुये श्री घनश्याम महाराज । (६) महेसाणा के नूतन शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में विजय स्तंभ के स्थापना

Shreeji Art (079) 26588016, 9879060686